

सातवाँ अंक
2026

अभिव्यक्ति

सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(एसपीएमसीआईएल)

निगम का 21वां स्थापना दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह









कंपनी द्वारा 21वां स्थापना दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह 20 अगस्त, 2026 को निगम कार्यालय के बोर्ड कक्ष में पूर्ण उत्साह के साथ मनाया गया। इस आयोजन में मुख्य अतिथि माननीय वित्त राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा डिजिटल रूप से कार्यक्रम को संबोधित किया गया।

नराकास दिल्ली (उपक्रम–2) छमाही बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति दिल्ली (उपक्रम–2) की दिनांक 19.08.2026 को आयोजित छमाही बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान निगम कार्यालय की गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" को शील्ड सम्मान पुरस्कार प्रदान किया गया। निगम कार्यालय से श्री सुनील कुमार सिन्हा, निदेशक (मानव संसाधन) शील्ड ग्रहण करते हुए।

अभिव्यक्ति

सातवां अंक–2026

गृह पत्रिका

संरक्षक

श्री बी. जे. गुप्ता

मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.)

संपादक

श्री नरेश कुमार

प्रबंधक (रा.भा.)

संकलनकर्ता

श्री अनुराग शर्मा

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुश्री रश्मि कौशिक

पर्यवेक्षक (आर.एम.)

श्री आलोक यादव

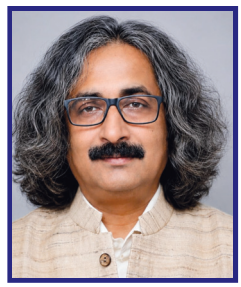
सचिवीय सहायक (रा.भा.)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के निजी विचार हैं। रचना की मौलिकता और अन्य किसी विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	संदेश	02–05
2.	संरक्षक की कलम से	06
3.	संपादकीय	07
4.	जीवन यात्रा – संघर्ष से सफलता तक	08–13
5.	परिवार के साथ दिल्ली से बद्रीनाथ : एक सुखद और यादगार यात्रा	14
6.	कंपनी सचिव की नियुक्ति और भूमिका	15–16
7.	खुद वह बदलाव बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं	17
8.	सहचर	18
9.	अहिंसा से सह–अस्तित्व तक	19–20
10.	सपने	20
11.	आओ जाने भारत के स्मारक सिक्को के बारे में	21–22
12.	हर्षिल घाटी : जहाँ हिमालय अपनी सबसे शांत भाषा में बोलता है	23–24
13.	सब कुछ बनने की चाह में कहीं खुद को तो नहीं खो रहे हम?	25–26
14.	सीआरएम	27–28
15.	सूचना से समाधान तक : जागरूक नागरिक की सहभागिता	29–30
16.	जल स्थिरता	31–32
17.	पुरुषोत्तम	32
18.	कॉफी : सिर्फ एक पेय नहीं	33–34
19.	वंदे मातरम्	35–36
20.	संघ की राजभाषा नीति के कार्यालय में अनुपालन हेतु 20 सूत्री कार्यक्रम	37
21.	छोटे कदम, बड़ा प्रभाव: एक हरित भविष्य की ओर	38–39
22.	मैं तो सिर्फ एक पेड़ ही तो हूँ	40
23.	हर सिक्के की अपनी कहानी है	41
24.	निगम में वर्ष के दौरान आयोजित विविध गतिविधियां	42–44

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Chairman & Managing Director



संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि एसपीएमसीआईएल निगम कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका **"अभिव्यक्ति"** का सातवां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों, संपादकीय मंडल तथा कार्मिकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

वर्तमान समय अनेक चुनौतियों और संभावनाओं का समय है। विश्व स्तर पर बदलते आर्थिक समीकरण, विभिन्न क्षेत्रों में जारी संघर्ष, तकनीकी परिवर्तन की तीव्र गति तथा पर्यावरणीय चिंताएँ आज प्रत्येक राष्ट्र और संगठन के समक्ष नई चुनौतियाँ खड़ी कर रही हैं। ऐसे समय में आत्मनिर्भरता, नवाचार, गुणवत्ता और उत्तरदायित्व का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है।

एसपीएमसीआईएल राष्ट्र की आर्थिक एवं सामरिक संरचना से जुड़े अत्यंत महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन कर रहा है। मुद्रा, सिक्कों, प्रतिभूति दस्तावेजों तथा अन्य उच्च प्रतिभूति उत्पादों के निर्माण में हमारी भूमिका केवल एक व्यावसायिक दायित्व नहीं, बल्कि राष्ट्र सेवा का दायित्व है। मुझे यह संतोष है कि हमारे सभी कार्मिक अपनी प्रतिबद्धता, दक्षता और परिश्रम के बल पर इस दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन कर रहे हैं। बदलती तकनीकों को अपनाने, प्रक्रियाओं को अधिक दक्ष बनाने तथा पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी दृष्टिकोण विकसित करने की दिशा में भी निगम निरंतर अग्रसर है।

राजभाषा हिंदी हमारे प्रशासनिक कार्यों को सरल, सहज और प्रभावी बनाने के साथ–साथ भावनात्मक एकता का भी सशक्त माध्यम है। मुझे विश्वास है कि "अभिव्यक्ति" का यह अंक अपने विविध विषयों, विचारोत्तेजक लेखों तथा साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से पाठकों को ज्ञानवर्धन और प्रेरणा दोनों प्रदान करेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं संपादकीय मंडल को बधाई देता हूँ तथा एसपीएमसीआईएल परिवार के सभी सदस्यों के सुखद, स्वस्थ एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(विजय रंजन सिंह)

तृतीय तल, टावर–जी, विश्व व्यापार केंद्र, नौरोजी नगर, नई दिल्ली, 110029
3rd Floor, Tower–G, World Trade Centre, Nauroji Nagar, New Delhi – 110029
फोन / Tel.: +91-11-23701220, 43582220
ई–मेल / E-mail : cmd@spmcil.com वैब. / Web. : www.spmcil.com
CIN : U22213DL2006GOI144763
हिंदी आसान है, इसका प्रयोग बढ़ाइए

सुनील कुमार सिन्हा, निदेशक (मानव संसाधन)
Sunil Kumar Sinha, Director (Human Resource)



संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि निगम कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका **"अभिव्यक्ति"** का सातवां अंक प्रकाशित हो रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों एवं संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ।

किसी भी संगठन की वास्तविक शक्ति उसके मानव संसाधन में निहित होती है। एसपीएमसीआईएल की प्रगति और उपलब्धियों के पीछे हमारे कार्मिकों की निष्ठा, कार्यकुशलता तथा समर्पण का महत्वपूर्ण योगदान है। बदलते तकनीकी परिवेश और नई कार्य चुनौतियों के इस दौर में सीखने की निरंतर प्रवृत्ति, सकारात्मक सोच और सामूहिक प्रयास सफलता के प्रमुख आधार हैं।

मानव संसाधन विभाग का प्रयास केवल प्रशासनिक प्रक्रियाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसा कार्य वातावरण विकसित करना भी है जहाँ प्रत्येक कर्मचारी सम्मान, विश्वास और सहभागिता का अनुभव कर सके। कौशल विकास, कर्मचारी कल्याण और सौहार्दपूर्ण कार्य संस्कृति संगठन की दीर्घकालिक सफलता के लिए आवश्यक हैं।

साहित्य और सृजनात्मक गतिविधियाँ व्यक्ति के व्यक्तित्व को नई दिशा प्रदान करती हैं। **"अभिव्यक्ति"** हमारे कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को सामने लाने का एक सशक्त मंच है। यह पत्रिका केवल रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि हमारे संगठन की सामूहिक सोच और अनुभवों का प्रतिबिंब भी है।

मुझे आशा है कि **"अभिव्यक्ति"** का यह अंक संगठन में साहित्यिक एवं बौद्धिक वातावरण को और समृद्ध करेगा। इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए मैं सभी को बधाई देता हूँ और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(सुनील कुमार सिन्हा)

टी. नागराजन
T. Nagarajan
निदेशक (वित्त)
Director (Finance)
सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
(Wholly owned by Government of India)



संदेश

राजभाषा गृह पत्रिका **"अभिव्यक्ति"** के सातवें अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। इस पत्रिका के माध्यम से मुझे आपके साथ परोक्ष रूप से जुड़ने तथा अपने मनोभावों को साझा करने का एक अच्छा अवसर मिला है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य हमें यह सिखाता है कि परिवर्तन अब अपवाद नहीं, बल्कि एक सतत प्रक्रिया है। अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम, बाजार की अनिश्चितताएँ, तकनीकी बदलाव तथा संसाधनों पर बढ़ता दबाव प्रत्येक संगठन को अधिक सजग, लचीला और दूरदर्शी बनने की प्रेरणा देते हैं। ऐसे समय में वित्तीय प्रबंधन का अर्थ केवल संसाधनों का लेखा–जोखा रखना नहीं, बल्कि संगठन की भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सही निर्णय लेना भी है।

एसपीएमसीआईएल ने सदैव दक्षता, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को अपनी कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनाया है। उपलब्ध संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, प्रक्रियाओं में सुधार तथा भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप निवेश किसी भी संस्था की दीर्घकालिक सफलता के महत्वपूर्ण आधार होते हैं। मुझे विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयास निगम को निरंतर नई उपलबधियों की ओर अग्रसर करते रहेंगे।

संतुलन केवल वित्तीय प्रबंधन का ही नहीं, जीवन का भी महत्वपूर्ण सिद्धांत है। जिस प्रकार सुविचारित निर्णय किसी संस्था को स्थायित्व प्रदान करते हैं, उसी प्रकार साहित्य और चिंतन व्यक्ति को दृष्टि और संवेदनशीलता प्रदान करते हैं। **"अभिव्यक्ति"** हमारे कार्मिकों के विचारों, अनुभवों और रचनात्मकता को एक मंच प्रदान कर संगठन की बौद्धिक समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी सिद्ध होगा। इसके सफल प्रकाशन हेतु मैं संपादकीय मंडल एवं सभी रचनाकारों को अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

टी. नागराजन

(टी. नागराजन)

तृतीय तल, टावर–जी, विश्व व्यापार केंद्र, नौरोजी नगर, नई दिल्ली, 110029
3rd Floor, Tower–G, World Trade Centre, Nauroji Nagar, New Delhi – 110029
फोन / Tel.: +91-11- 43582215 ई–मेल / E-mail : df@spmcil.com, वैब. / Web. : www.spmcil.com
CIN : U22213DL2006GOI144763

रविन्द्र प्रताप सिंह, भा.प्र.से.
Ravindra Pratap Singh, I.A.S.
मुख्य सतर्कता अधिकारी
Chief Vigilance Officer

सत्यमेव जयते

सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
(Under Ministry of Finance, Government of India)



संदेश

"अभिव्यक्ति" के नवीन अंक के प्रकाशन के अवसर पर अपने विचार साझा करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। किसी भी संस्था की वास्तविक शक्ति केवल उसकी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि उन मूल्यों में निहित होती है जिनके आधार पर वह अपने दायित्वों का निर्वहन करती है। सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व ऐसे ही मूल्य हैं, जो किसी संगठन की विश्वसनीयता को सुदृढ़ बनाते हैं और उसे दीर्घकालिक सफलता की दिशा प्रदान करते हैं।

एसपीएमसीआईएल जैसे संवेदनशील और राष्ट्रहित से जुड़े संगठन में इन मूल्यों का महत्व और भी बढ़ जाता है। प्रतिभूति मुद्रण एवं टकसाल गतिविधियों से जुड़े हमारे कार्य केवल व्यावसायिक उत्तरदायित्व नहीं हैं, बल्कि जनविश्वास से भी जुड़े हुए हैं। इसलिए प्रत्येक स्तर पर ईमानदारी, निष्पक्षता और नियम सम्मत कार्यप्रणाली हमारी कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग होना चाहिए।

वर्तमान समय में प्रशासनिक प्रक्रियाओं में प्रौद्योगिकी का उपयोग निरंतर बढ़ रहा है। डिजिटल प्रणालियाँ, पारदर्शी प्रक्रियाएँ और उत्तरदायी प्रशासन न केवल कार्यकुशलता को बढ़ाते हैं, बल्कि सुशासन को भी सशक्त बनाते हैं। सतर्कता का उद्देश्य केवल अनियमित्ताओं की पहचान करना नहीं है, बल्कि ऐसी व्यवस्था को प्रोत्साहित करना है जिसमें सही कार्य स्वाभाविक रूप से हो और संस्थागत प्रक्रियाएँ निरंतर सुदृढ़ होती रहें।

नैतिकता का संबंध केवल नियमों से नहीं, बल्कि व्यक्तिगत आचरण से भी है। साहित्य और चिंतन हमें आत्ममंथन का अवसर प्रदान करते हैं तथा सही और गलत के बीच अंतर को समझने की दृष्टि विकसित करते हैं। इसी दृष्टि से **"अभिव्यक्ति"** जैसी पत्रिका केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति का मंच नहीं, बल्कि विचारों और मूल्यों के आदान–प्रदान का भी माध्यम है।

मुझे विश्वास है कि **"अभिव्यक्ति"** का यह सातवां अंक पाठकों को सकारात्मक चिंतन, रचनात्मकता और मानवीय मूल्यों के प्रति प्रेरित करेगा। इस अंक में अपनी लेखनी से योगदान देने वाले सभी रचनाकारों को मेरी शुभकामनाएँ।

रविन्द्र

(रविन्द्र प्रताप सिंह, भा.प्र.से.)

तृतीय तल, टावर–जी, विश्व व्यापार केंद्र, नौरोजी नगर, नई दिल्ली, 110029
3rd Floor, Tower–G, World Trade Centre, Nauroji Nagar, New Delhi – 110029
फोन / Tel.: +91-11-43582260 ई–मेल / E-mail : cvo@spmcil.com, वैब. / Web. : www.spmcil.com
CIN : U22213DL2006GOI144763

बी. जे. गुप्ता
B. J. GUPTA
मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
Chief General Manager (Human Resource)
सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
(Under Ministry of Finance, Government of India)

संरक्षक की कलम से



"अभिव्यक्ति" के सातवें अंक के प्रकाशन के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

गृह पत्रिका किसी भी संस्थान की रचनात्मक चेतना, साहित्यिक अभिरुचि तथा वैचारिक समृद्धि का परिचायक होती है। **"अभिव्यक्ति"** हमारे अधिकारी एवं कर्मचारियों को अपने विचारों, अनुभवों और सृजनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का एक सार्थक मंच प्रदान करती रही है।

इसके साथ–साथ राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन का भी एक महत्वपूर्ण बिंदु है। इससे कार्यालय में हिंदी के प्रति एक अनुकूल वातावरण निर्मित होता है। अभिव्यक्ति पत्रिका को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–2) दिल्ली के मंच पर निरंतर पुरस्कृत करना संगठन के लिए एक विशिष्ट उपलब्धि है। मैं इसके लिए संपादन की पूरी टीम को बधाई देता हूं साथ ही इसके लिए लेख देने वाले सभी कार्मिकों का भी मैं आभारी हूं।

आज के बदलते परिवेश में ज्ञान, संवाद और रचनात्मकता का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। ऐसे समय में साहित्य और भाषा न केवल हमें अपनी संस्कृति और मूल्यों से जोड़ते हैं, बल्कि सकारात्मक चिंतन को भी प्रोत्साहित करते हैं। मुझे विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित विविध विषयों पर आधारित लेख, कविताएँ एवं अन्य रचनाएँ पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी और रुचिकर सिद्ध होंगी।

मैं इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल, राजभाषा अनुभाग तथा सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि **"अभिव्यक्ति"** भविष्य में भी इसी प्रकार रचनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनी रहेगी।

बि जे गुप्ता

(बी.जे. गुप्ता)

तृतीय तल, टावर–जी, विश्व व्यापार केंद्र, नौरोजी नगर, नई दिल्ली, 110029
3rd Floor, Tower–G, World Trade Centre, Nauroji Nagar, New Delhi – 110029
फोन/Tel.: +91-11-23701225/26, 91-11-43582250
ई–मेल/E-mail : bj.gupta@spmcil.com वैब./ Web. : www.spmcil.com
CIN : U22213DL2006GOI144763

संपादकीय.....



प्रिय पाठकों,

'अभिव्यक्ति' का यह नया अंक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। अभिव्यक्ति केवल शब्दों का संकलन नहीं है, बल्कि यह हमारे निगम की कार्य संस्कृति और समकालीन समय का एक जीवंत दस्तावेज है। संगठन की पहचान इस बात से होती है कि वहाँ संवाद और विचारों के आदान–प्रदान के कितने झरोखे खुले हैं। यह पत्रिका वही झरोखा बनने का एक विनम्र प्रयास है।

आज हम जिस दौर में जी रहे हैं, वहाँ सूचनाओं की बाढ़ है, लेकिन संवाद की कमी है। सोशल मीडिया के इस युग में हर कोई बोल रहा है, पर सुनने और समझने का धैर्य लगातार घटता जा रहा है। ऐसे समय में गंभीर लेखन, साहित्य और वैचारिक विमर्श की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है।

मेरा हमेशा से यह मानना रहा है कि एक बेहतरीन पत्रिका केवल संपादकीय टीम की मेहनत से नहीं, बल्कि पाठकों की सक्रिय भागीदारी से बनती है। आपके पत्र, आपकी प्रतिक्रियाएँ और आपकी आलोचनाएँ ही हमारी असली ऊर्जा है।

विशेष उल्लेखनीय

इस पत्रिका के आवरण पृष्ठ का डिजाइन भारत सरकार टकसाल, मुंबई के कला एवं उत्कीर्णन विभाग से श्री स्वपनिल पांचाल द्वारा तैयार किया गया है।

शुभकामनाओं सहित,

(नरेश कुमार)
प्रबंधक (राजभाषा)

जीवन यात्रा – संघर्ष से सफलता तक



न्यायमूर्ति एल्बर्ट पी. टटल सीनियर ने वर्ष 1957 में एमोरी विश्वविद्यालय के स्नातकों को संबोधित करते हुए कहा था कि "पेशेवर वह है जो सेवा प्रदान करता है। किंतु उसकी सेवा केवल श्रमिक या कुशल श्रमिक की सेवा भर नहीं होती। वह सेवा उसके संपूर्ण व्यक्तित्व से प्रभावित होती है। उसकी वास्तविक संपत्ति वह स्वयं होता है। सेवा का कोई निश्चित मूल्य नहीं हो सकता, क्योंकि मनुष्य के मूल्य का आकलन कैसे किया जा सकता है? यदि उसमें सत्यनिष्ठा नहीं है तो उसका कोई मूल्य नहीं है, और यदि सत्यनिष्ठा है तो उसका मूल्य अनंत है। उसके जीवन की वास्तविक समृद्धि कर्तव्य की अपेक्षा से कहीं अधिक योगदान देने में निहित है। किंतु उस महान योगदान को उसके प्रतिफल, चाहे वह धन, शक्ति अथवा प्रसिद्धि हो, के साथ कभी भ्रमित नहीं करना चाहिए, क्योंकि प्रतिफल तुच्छ है।"

पद्मश्री श्री मालेगम, पूर्व अध्यक्ष, भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट्स संस्थान तथा भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व बोर्ड सदस्य द्वारा साझा किए गए ये विचार मेरे जीवन से गहराई से जुड़े हुए हैं, क्योंकि ये उन मूल्यों को प्रतिबिंबित करते हैं जिन्होंने मेरी जीवन–यात्रा को आकार दिया–एक ऐसी यात्रा जो परिवार, धैर्य, सीखने की निरंतर इच्छा और सेवा–भाव पर आधारित रही है।

प्रत्येक मानव एक कहानी है

हर व्यक्ति का जीवन संबंधों, अनुभवों, संघर्षों और आकांक्षाओं से निर्मित एक कथा है। जिस प्रकार विशाल नदियाँ छोटे और साधारण स्रोतों से निकलकर निरंतर प्रवाह से शक्तिशाली बनती हैं। जिस किसी ने भी महान नदियों जैसे – गंगा के उद्गम गोमुख या कावेरी के उद्गम तलकावेरी को देखा है, वह इस बात पर चकित रह जाएगा कि कैसे एक छोटी–सी जलधारा एक विशाल नदी का रूप ले लेती है, जो अंततः सागर में विलीन हो जाती है। उसी प्रकार मानव जीवन भी विनम्र परिस्थितियों से प्रारंभ होकर दृढ़ संकल्प और उद्देश्यपूर्ण प्रयासों के द्वारा विकसित होता है।

मेरा नाम नागराजन है। मैं श्री राजमणिक्कम त्यागराजन और श्रीमती शांता का एकमात्र पुत्र हूँ। तमिल मेरी मातृभाषा है और मेरा पालन–पोषण मेरी दो बड़ी बहनों के साथ ऐसे परिवार में हुआ, जिसकी नींव संघर्ष और जिम्मेदारी पर आधारित थी।

मेरे पिता साधारण पृष्ठभूमि से थे। कम आयु में अपने पिता को खो देने के कारण उन्हें बहुत जल्दी कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। संयुक्त परिवार में सबसे बड़े पुरुष सदस्य होने के नाते उन्हें कम उम्र में ही अनेक पारिवारिक दायित्व निभाने पड़े। इन चुनौतियों के बावजूद उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की और दिल्ली विश्वविद्यालय से पत्राचार के माध्यम से कला स्नातक की डिग्री अर्जित की।

वर्ष 1965 में मेरे पिता अपने छोटे भाई के साथ चेन्नई से जमशेदपुर आए और टेल्को में स्टेनोग्राफर के रूप में कार्यभार संभाला। उस समय किसी अपरिचित क्षेत्र में जाकर बसना अपने आप में साहसिक निर्णय था। मेरी माता, जो न तो हिंदी जानती थीं और न ही अंग्रेजी, एक शिशु के साथ उनके साथ आईं और पूरे परिवार को असाधारण शक्ति और गरिमा के साथ संभाला।

पूर्णकालिक नौकरी करते हुए मेरे पिता ने कंपनी सेक्रेटरी (यूके) की कठिन पेशेवर योग्यता प्राप्त की। उसी वर्ष 1972 में मेरा जन्म झारखंड के जमशेदपुर में हुआ। उनके जीवन ने मुझे यह सिखाया कि शिक्षा, परिश्रम और सत्यनिष्ठा से परिस्थितियों की सीमाओं को हमेशा पार किया जा सकता है।

शिक्षा और आध्यात्मिक ज्ञानार्जन

मैंने मुख्यतः चेन्नई में शिक्षा प्राप्त की। मैं हमेशा से ही पढ़ाई में अच्छा रहा और उच्च माध्यमिक परीक्षा में विद्यालय में दूसरा स्थान प्राप्त किया। स्नातक अध्ययन के साथ–साथ कॉस्ट अकाउंटेंसी (सीएमए) की पढ़ाई करते समय पहली बार शैक्षणिक असफलता का अनुभव हुआ। मैं पेशेवर परीक्षाओं की तैयारी उसी तरह कर रहा था, जैसे मैं कॉलेज की परीक्षाओं के लिए करता था लेकिन पेशेवर परीक्षाओं में उच्च मानकों की आवश्यकता होने के कारण, मैं पास होने के लिए जरूरी अंक पाने से काफी पीछे रह गया। सफलता पाने के लिए मुझे काफी ज़्यादा मेहनत करनी पड़ी–जिसमें गहन स्व–अध्ययन और अतिरिक्त ट्यूटोरियल क्लास में शामिल होना शामिल था। स्नातक के साथ–साथ एक कठिन पेशेवर योग्यता पूरी करने के लिए अनुशासन और एकाग्रता की जरूरत थी, लेकिन इसने मुझे दृढ़ता और समय प्रबंधन का महत्व भी सिखाया।

इन प्रारंभिक असफलताओं से उबरने के लिए मुझे अपनी कॉलेज पुस्तकालय में जे. कृष्णमूर्ति (जेके) की पुस्तकों और स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रवचनों से मानसिक संबल मिला। जे. कृष्णमूर्ति की 'कॉमेंट्रीज ऑन लिविंग' ने आत्म–जागरूकता और सजगता की शक्ति को समझने में मेरी सहायता की।

पेशेवर जीवन का आरंभ

कॉस्ट अकाउंटेंसी की उपाधि तथा वाणिज्य स्नातक (बी.कॉम.) की डिग्री प्राप्त करने के उपरांत मैंने वर्ष 1995 में अपने व्यावसायिक जीवन की शुरुआत की। उन दिनों कैंपस साक्षात्कार की कोई अवधारणा नहीं थी और केवल शैक्षणिक योग्यताएँ ही पर्याप्त नहीं मानी जाती थी। नियोक्ता कॉरपोरेट जगत में प्रवेश के लिए पूर्व कार्यानुभव को एक प्रकार का "वीजा" मानते थे। मुझे कॉरपोरेट जगत में प्रवेश का यह "वीजा" अपने पिता के माध्यम से प्राप्त हुआ। मेरे पिताश्री चेन्नई स्थित ताज कोरोमंडल में कंपनी सचिव के पद पर कार्यरत थे। उनके पूर्व अनुभव और उनकी अनुशंसा के कारण मुझे



ताज होटल समूह में प्रवेश का अवसर प्राप्त हुआ।

मैं चौबीस वर्ष की आयु में सीधे कार्यकारी निदेशक एवं कंपनी सचिव को रिपोर्ट करता था। मेरी जिम्मेदारियों में इकाई के खातों का समेकन, वार्षिक प्रतिवेदन तथा वार्षिक आम बैठक के लिए अध्यक्षीय पुस्तिका तैयार करना और मुंबई स्थित प्रतिष्ठित ताज महल पैलेस में आयोजित निदेशक मंडल की बैठकों में भाग लेना शामिल था, जिनकी अध्यक्षता इंडियन होटल्स कंपनी लिमिटेड के अध्यक्ष द्वारा की जाती थी। इसी दौरान मैंने वर्ष 1996 में चार्टर्ड अकाउंटेंसी की उपाधि भी प्राप्त कर ली। इसके तुरंत बाद मुझे मंगलुरु स्थित ताज मंजरून में मुख्य लेखाकार के पद पर नियुक्त किया गया, जिससे मैं समूह के सबसे युवा विभागाध्यक्षों में से एक बन गया।

आतिथ्य उद्योग ने मुझे अपने व्यावसायिक जीवन के कुछ सबसे मूल्यवान पाठ सिखाए—सटीकता, अनुशासन, ग्राहक—केंद्रित दृष्टिकोण, टीम भावना तथा संकट प्रबंधन। इस अवधि के दौरान हमने अनेक महत्वपूर्ण संगठनात्मक एवं तकनीकी परिवर्तनों का सफलतापूर्वक सामना किया, जिनमें वाई—टू—के (Y2K) चुनौती तथा ताज समूह के नेतृत्व में हुए परिवर्तन प्रमुख थे।

नए आयामों की ओर : सुविधाजनक दायरे से बाहर निकलकर सीखना

यद्यपि मेरे करियर की शुरुआत अत्यंत उत्कृष्ट रही थी, परंतु समय के साथ मुझे यह अनुभव होने लगा कि केवल एक ही उद्योग तक सीमित रहने के बजाय अपने अनुभव और दृष्टिकोण का विस्तार करना आवश्यक है। मुझे चिंता थी कि यदि मैं केवल होटल उद्योग तक ही सीमित रहा, तो वित्त एवं व्यावसायिक संचालन की व्यापक दुनिया को समझने का अवसर सीमित हो सकता है।

इसी सोच ने वर्ष 1999 में मुझे आतिथ्य क्षेत्र से विनिर्माण क्षेत्र की ओर खींचा। मैंने क्रिमसन मेटल इंजीनियरिंग कंपनी लिमिटेड (पूर्व नाम श्री सारबती स्टील ट्यूब्स लिमिटेड) में कार्यभार ग्रहण किया। आतिथ्य उद्योग से विनिर्माण क्षेत्र में जाना सांस्कृतिक तथा परिचालन दोनों दृष्टियों से एक बड़ा परिवर्तन था। इसने मुझे एक ऐसे कार्य परिवेश से परिचित कराया, जहाँ व्यावसायिक गतिविधियाँ प्रायः पारिवारिक स्वामित्व संरचनाओं तथा पदानुक्रम—आधारित प्रबंधन शैली से प्रभावित होती थीं।

यद्यपि यह अनुभव अपेक्षाकृत अल्पकालिक और चुनौतीपूर्ण था, फिर भी यह मेरे लिए सीखने का एक महत्वपूर्ण चरण सिद्ध हुआ। इससे मुझे यह समझने का अवसर मिला कि प्रत्येक संगठन की अपनी विशिष्ट कार्य—संस्कृति होती है तथा व्यावसायिक विकास काफी हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति अपने मूल्यों से समझौता किए बिना नई परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को कितना ढाल सकता है। उस समय मैं ऐसे कार्य वातावरण की तलाश में था जो ज्ञान, विकास और व्यावसायिक उन्नति के लिए अधिक अनुकूल एवं प्रेरणादायक हो।

वाणिज्यिक एवं व्यावसायिक कार्यों की गहन समझ

वर्ष 2000 से 2006 तक का कालखंड मेरे व्यावसायिक जीवन का एक परिवर्तनकारी चरण रहा। पारंपरिक वित्तीय भूमिकाओं तक सीमित रहने के बजाय मैंने सचेत रूप से वाणिज्यिक तथा व्यवसाय—सहभागिता संबंधी कार्यों की ओर अग्रसर होने का निर्णय लिया। इसी क्रम में मैंने चेन्नई में आरपीजी स्पेंसर समूह के अंतर्गत 'फूडवर्ल्ड' में कार्यभार ग्रहण किया, जहाँ मैं अनेक खुदरा (Retail) स्टोर्स के वाणिज्यिक कार्यों का दायित्व संभालता था। खुदरा व्यापार के संचालन ने मुझे व्यापक स्तर पर प्रणालियों, प्रक्रियाओं, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन तथा ग्राहक—केंद्रित व्यावसायिक कार्यप्रणालियों को समझने का अवसर प्रदान किया। इस अवधि में मैंने परिचालन दक्षता, जवाबदेही तथा प्रक्रियाओं के मानकीकरण के महत्व को गहराई से सीखा।

वर्ष 2002 से 2005 के बीच मुझे दक्षिण भारत में पेप्सिको के स्नैक उत्पाद प्रभाग (फ्रिटो—ले, एफएमसीजी क्षेत्र) के बिक्री एवं वितरण नेटवर्क की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान देने का अवसर प्राप्त हुआ। आंध्र प्रदेश बिक्री कर अधिनियम के अंतर्गत उत्पादों का पुनर्वर्गीकरण कराकर कर की दर 12 प्रतिशत के स्थान पर 8 प्रतिशत सुनिश्चित करने के माध्यम से मैंने निगम

को प्रतिवर्ष लगभग एक करोड़ रुपये की बचत कराई। इस उपलब्धि के लिए मुझे 'लक्ष्य 50 प्रतिशत – जोश' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इसके पश्चात वर्ष 2006 में मैंने दूरसंचार क्षेत्र की अग्रणी कंपनी 'वोडाफोन' (पूर्व में हचिसन एस्सार साउथ लिमिटेड) में कार्यभार ग्रहण किया। ये उद्योग अत्यंत गतिशील और प्रतिस्पर्धात्मक थे, जहाँ त्वरित निर्णय–क्षमता, प्रभावी क्रियान्वयन तथा निरंतर नवाचार सफलता की अनिवार्य शर्तें थीं।

उन वर्षों में व्यावसायिक उन्नति का आधार डिजिटल नेटवर्किंग मंचों की अपेक्षा व्यक्तिगत प्रतिष्ठा, पेशेवर संबंधों तथा उद्योग जगत में अर्जित पहचान अधिक हुआ करती थी। भर्ती सलाहकार (Recruitment Consultants) मुख्यतः पेशेवर संस्थानों के डेटाबेस तथा संदर्भों (Referrals) पर निर्भर रहते थे। मेरे करियर में प्रत्येक परिवर्तन का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण सिद्धांत के आधार पर किया गयाकृऐसा अवसर प्राप्त करना, जहाँ नेतृत्व की भूमिका निभाते हुए संगठन पर सार्थक और सकारात्मक प्रभाव डाला जा सके।

किसी भी संगठन को छोड़ने से पहले मैंने सदैव यह सुनिश्चित किया कि मेरे कार्यों और योगदान से संगठन को सकारात्मक लाभ पहुँचा हो तथा मेरे पेशेवर संबंध सौहार्दपूर्ण और सम्मानजनक बने रहें। मेरा दृढ़ विश्वास है कि करियर केवल योग्यता और कौशल के आधार पर नहीं बनता, बल्कि विश्वसनीयता और सद्भावना भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं।

इनर इंजीनियरिंग

वर्ष 2004 में मैंने इनर इंजीनियरिंग किया, जो सद्गुरु द्वारा निर्मित एक प्रमुख व्यक्तिगत परिवर्तन कार्यक्रम है। सद्गुरु एक प्रसिद्ध भारतीय योगी, रहस्यवादी तथा ईशा फाउंडेशन के संस्थापक हैं। इसे किसी दर्शन या धर्म के बजाय "कल्याण की एक तकनीक" के रूप में वर्णित किया जाता है। यह योग के प्राचीन विज्ञान पर आधारित है, जिसका उद्देश्य व्यक्तियों को अपने शरीर, मन, भावनाओं और जीवन ऊर्जा के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सहायता प्रदान करना है। मैं प्रतिदिन इस योगाभ्यास को करता हूँ, जो मुझे शांति, स्पष्टता और आनंद की आंतरिक अवस्था स्थापित करने में सहायता करता है।

प्रौद्योगिकी परिवर्तन के युग में आगे बढ़ते हुए

प्रारंभिक वर्षों का यह दौर विभिन्न उद्योगों में एंटरप्राइज रिसोर्स प्लानिंग (ERP) प्रणालियों के तीव्र प्रसार के साथ भी जुड़ा हुआ था। व्यवसाय अपनी दक्षता और विस्तार क्षमता को बढ़ाने के लिए प्रक्रियाओं के एकीकरण और स्वचालन की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे थे। पेप्सी ने अपना कैप्टिव साझा सेवा केंद्र स्थापित किया और अनेक प्रक्रियाओं का आउटसोर्सिंग कर उन्हें गुड़गांव से केंद्रीकृत रूप से संचालित किया जाने लगा।

वैश्वीकरण और प्रौद्योगिकी–आधारित परिवर्तन के कारण उद्योगों में तीव्र गति से बदलाव हो रहे थे, और इसके साथ ही मेरे करियर की दिशा भी और अधिक विविधतापूर्ण होती गई। महिंद्रा हॉलिडेज, सास्केन कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजीज तथा जेनपैक्ट जैसे संगठनों में कार्य करने के अनुभव ने मुझे आईटी–सक्षम सेवाओं, बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग तथा ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (GCC) और ग्लोबल बिजनेस सर्विसेज (GBS) के माध्यम से संचालित वैश्विक परिचालनों की व्यापक समझ प्रदान की।

जेनपैक्ट में मैंने हयात होटल्स नॉर्थ अमेरिका के लिए अकाउंट–टू–रिपोर्ट (ATR) प्रक्रिया का प्रबंधन किया, जहाँ हैदराबाद स्थित लगभग एक सौ पेशेवरों की टीम का नेतृत्व मेरे दायित्वों में शामिल था। इस भूमिका में विभिन्न समय क्षेत्रों (Time Zones) के अनुरूप कार्य करना तथा अमेरिकी व्यावसायिक समय–सारिणी के अनुरूप चुनौतीपूर्ण दायित्वों का निर्वहन करना आवश्यक था।

वे वर्ष व्यावसायिक दृष्टि से अत्यंत चुनौतीपूर्ण और गहन थे। लंबे कार्य घंटे, उच्च प्रदर्शन अपेक्षाएँ तथा वैश्विक परिचालन मानकों ने मेरी सहनशीलता और अनुकूलन क्षमता की निरंतर परीक्षा ली। साथ ही, इन अनुभवों ने मेरी नेतृत्व क्षमता को और

सुदृढ़ किया तथा टीमवर्क और प्रक्रिया उत्कृष्टता के प्रति मेरी समझ और सराहना को गहरा किया।

वर्ष 2010 तक, मैं पंद्रह वर्षों की अवधि में निजी क्षेत्र के आठ संगठनों में कार्य करने का अनुभव अर्जित कर चुका था। प्रत्येक परिवर्तन, चुनौती और सीखने के अवसर ने मेरे व्यावसायिक दृष्टिकोण को और अधिक व्यापक तथा परिपक्व बनाया।

लोक सेवा और राष्ट्र निर्माण की ओर संक्रमण

वर्ष 2010 में मैं अपने करियर के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर पहुँचा। मेरे सामने एक ओर अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य वाली आकर्षक कॉर्पोरेट अवसर को अपनाने का विकल्प था, तो दूसरी ओर अपेक्षाकृत कम पारिश्रमिक के साथ सार्वजनिक क्षेत्र में एक स्थिर भूमिका ग्रहण करने का अवसर था।

गहन विचार–विमर्श के पश्चात मैंने चेन्नई स्थित टीआईसीईएल बायोपार्क में उपाध्यक्ष (वित्त) के रूप में सार्वजनिक क्षेत्र में प्रवेश करने का निर्णय लिया। यह निर्णय केवल स्थिरता की इच्छा से प्रेरित नहीं था, बल्कि उन संस्थाओं में योगदान देने की भावना से भी प्रभावित था जो व्यापक सामाजिक एवं राष्ट्रीय उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्यरत थीं।

इसी अवधि में मैंने अपने पिता के लंबे समय से संजोए हुए एक सपने को साकार करते हुए वर्ष 2010 में कंपनी सचिव की उपाधि भी प्राप्त की।

इसके पश्चात मैंने एचएलएल बायोटेक लिमिटेड में मुख्य वित्तीय अधिकारी एवं कंपनी सचिव के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। यह संगठन भारत की वैक्सीन सुरक्षा अवसंरचना को सुदृढ़ बनाने से जुड़े राष्ट्रीय महत्व की परियोजनाओं से संबद्ध था। मुझे कसौली स्थित केंद्रीय औषधि प्रयोगशाला, कुन्नूर स्थित पाश्चर संस्थान तथा चेन्नई स्थित बीसीजी वैक्सीन प्रयोगशाला जैसी संस्थाओं में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के मानकों के अनुरूप गुड मैन्युफैक्चरिंग प्रैक्टिसेज (GMP) के आधुनिकीकरण और अनुपालन संबंधी पहलों में योगदान देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

यद्यपि एकीकृत वैक्सीन परिसर (Integrated Vaccine Complex) परियोजना को वैक्सीन निर्माताओं से अपेक्षित तकनीकी सहयोग प्राप्त करने में कुछ कार्यान्वयन संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ा, फिर भी इस अनुभव ने मेरे इस विश्वास को और सुदृढ़ किया कि राष्ट्र निर्माण से जुड़ी पहलों के लिए धैर्य, दीर्घकालिक दृष्टि और सामूहिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है।

विनिर्माण क्षेत्र में नेतृत्व और वित्तीय रूपांतरण

वर्ष 2016 में मैंने डिंडीगुल स्थित नागा लिमिटेड, जो एक सार्वजनिक रूप से सूचीबद्ध विविधीकृत विनिर्माण कंपनी है, में कार्यभार ग्रहण किया। मेरे करियर का यह चरण मुख्यतः संगठनात्मक परिवर्तन, प्रौद्योगिकी कार्यान्वयन तथा वित्तीय सुदृढ़ीकरण पर केंद्रित रहा।

इस अवधि के दौरान हमने सफलतापूर्वक एसएपी एस/4HANA प्रणाली को लागू किया तथा परिचालन लाभप्रदता में सुधार किया, जिसके परिणामस्वरूप कंपनी की ऋण रेटिंग में वृद्धि हुई और वित्तीय प्रदर्शन अधिक सुदृढ़ हुआ। इस अनुभव ने यह प्रदर्शित किया कि प्रौद्योगिकी, सुशासन तथा अनुशासित क्रियान्वयन के माध्यम से संगठनात्मक दक्षता और प्रतिस्पर्धात्मकता में उल्लेखनीय सुधार लाया जा सकता है।

करेंसी एवं सिक्योरिटी प्रिंटिंग के माध्यम से राष्ट्र सेवा

मेरे व्यावसायिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अध्याय वर्ष 2018 में प्रारंभ हुआ, जब मैंने भारतीय रिजर्व बैंक नोट मुद्रण प्राइवेट लिमिटेड में मुख्य वित्तीय अधिकारी–सह–कंपनी सचिव के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। भारतीय रिजर्व बैंक की पूर्ण स्वामित्व वाली इस सहायक कंपनी की देश के लिए बैंक नोटों के मुद्रण एवं आपूर्ति में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है।

वर्ष 2018 से 2025 तक के अपने कार्यकाल के दौरान बैंक नोट कागज एवं स्याही के स्वदेशी उत्पादन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति प्राप्त की गई, जिससे आयात पर निर्भरता कम हुई और राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करने में सहायता मिली। साथ ही, मैसूर तथा सालबोनी स्थित मुद्रणालयों में विश्वस्तरीय मुद्रण अवसंरचना स्थापित करने के उद्देश्य से व्यापक आधुनिकीकरण पहलें भी संचालित की गईं।

ये प्रयास विशेष रूप से विमुद्रीकरण तथा कोविड–19 महामारी जैसी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के दौरान अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुए, जब निर्बाध मुद्रा आपूर्ति सुनिश्चित करना राष्ट्रीय महत्व का विषय बन गया था।

वर्ष 2025 में मैंने सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड में निदेशक (वित्त) का पदभार ग्रहण किया। इस भूमिका में मैं उच्च सिक्योरिटी प्रोडक्टस, करेंसी नोटों तथा सिक्का उत्पादन प्रणालियों के स्वदेशीकरण को बढ़ावा देकर भारत के आत्मनिर्भरता के दृष्टिकोण को साकार करने में अपना योगदान निरंतर प्रदान कर रहा हूँ।

जीवन यात्रा से प्राप्त अनुभव और सीख

दशकों की इस यात्रा पर पीछे मुड़कर देखने पर मैं यह अनुभव करता हूँ कि मेरी उपलब्धियाँ केवल मेरे व्यक्तिगत प्रयासों का परिणाम नहीं हैं। यह यात्रा मेरे माता–पिता के त्याग, शिक्षकों एवं मार्गदर्शकों के निर्देशन, सहकर्मियों और वरिष्ठों के विश्वास, मेरी टीम के सदस्यों के समर्पण तथा मेरे परिवार के अटूट सहयोग से आकार ग्रहण कर सकी है। ईश्वर की कृ पा से मुझे भारत के तीनों पेशेवर संस्थानों–चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया, कॉस्ट अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया तथा कंपनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया–की फेलोशिप प्राप्त करने का दुर्लभ सौभाग्य मिला है।

मेरी पत्नी अनुराधा, जो स्वयं एक कॉस्ट अकाउंटेंट हैं और वर्तमान में एसआईपी अबेकस में प्रधान प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत हैं, इस पूरी यात्रा में मेरे लिए निरंतर शक्ति और प्रेरणा का स्रोत रही हैं। हमारे पुत्र मंजूनाथ ने भारतीय प्रबंधन संस्थान, बेंगलुरु से एमबीए पूर्ण करने के पश्चात डेलॉयट में वरिष्ठ परामर्शदाता के रूप में अपना सफल व्यावसायिक मार्ग बनाया है। उनकी उपलब्धियाँ मेरे जीवन की सबसे बड़ी खुशियों में से हैं।

वर्षों के अनुभव ने मुझे यह विश्वास दिलाया है कि व्यावसायिक सफलता का मूल्यांकन केवल पद, पारिश्रमिक या प्रतिष्ठा के आधार पर नहीं किया जा सकता। वास्तविक सफलता ईमानदारी बनाए रखने, संस्थानों के लिए मूल्य सृजित करने, लोगों का मार्गदर्शन करने तथा समाज में सार्थक योगदान देने में निहित है।

जिस भी संगठन में मैंने कार्य किया, जिन भी चुनौतियों का सामना किया और जिन भी परिवर्तनों को स्वीकार किया, वे सभी सीखने और आत्म–अन्वेषण की एक व्यापक यात्रा का हिस्सा बन गए। जिस प्रकार नदियाँ छोटी धाराओं के रूप में आरंभ होकर अंततः महासागर में मिल जाती हैं, उसी प्रकार हमारे जीवन को भी धैर्य, विनम्रता और सेवा के माध्यम से अर्थ प्राप्त होता है।

अंततः, व्यावसायिकता की पहचान इस बात से नहीं होती कि हमने अपने लिए कितना अर्जित किया, बल्कि इससे होती है कि हमने दूसरों के लिए कितना योगदान दिया। जीवन का वास्तविक मापदंड प्राप्त सम्मान में नहीं, बल्कि उन दायित्वों के निर्वहन में निहित है जिन्हें हमने ईमानदारी, प्रतिबद्धता और करुणा के साथ पूरा किया है।

टी. नागराजन
निदेशक (वित्त)

परिवार के साथ दिल्ली से बद्रीनाथ : एक सुखद और यादगार यात्रा



जीवन की भागदौड़ के बीच परिवार के साथ बिताए गए कुछ पल हमेशा स्मृतियों में बस जाते हैं। ऐसी ही एक यादगार यात्रा हमारे परिवार की दिल्ली से बद्रीनाथ धाम तक की कार यात्रा रही। बद्रीनाथ धाम की यात्रा के लिए आधिकारिक चार धाम यात्रा पंजीकरण और पर्यटन पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य है। बद्रीनाथ मंदिर उत्तराखंड के चमोली जिले में अलकनंदा नदी के तट पर स्थित है। यह भगवान विष्णु को समर्पित एक प्रमुख हिंदू तीर्थस्थल है और चार धामों में से एक है। यहाँ भगवान विष्णु (बद्री विशाल) की काले पत्थर की एक मीटर ऊंची मूर्ति पद्मासन मुद्रा में विराजमान है।

इस प्राचीन मंदिर की स्थापना आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा की गई थी। मंदिर के समीप ही अलकनंदा नदी के किनारे गर्म पानी का एक प्राकृतिक स्रोत 'तप्त कुंड' स्थित है, जिसमें दर्शन से पहले स्नान करना पवित्र माना जाता है। प्रतिकूल और अत्यधिक ठंडी मौसमी दशाओं के कारण, यह मंदिर वर्ष में केवल छह महीने (मई की शुरुआत से नवंबर की शुरुआत तक) ही भक्तों के लिए खुलता है। सर्दियों के महीनों में जब मंदिर बंद रहता है, तब भगवान बद्रीनाथ की पूजा जोशीमठ (नरसिंह मंदिर) में की जाती है।

यह यात्रा हमारे लिए केवल एक तीर्थयात्रा नहीं थी, बल्कि परिवार के साथ समय बिताने और प्रकृति के सुंदर दृश्यों का आनंद लेने का एक सुनहरा अवसर भी थी।

हम सुबह तड़के दिल्ली से रवाना हुए। शहर की भीड़–भाड़ पीछे छूटते ही यात्रा का आनंद बढ़ने लगा। रास्ते में हरिद्वार और ऋषिकेश पहुँचे, जहाँ गंगा नदी का सुंदर दृश्य देखकर मन प्रसन्न हो गया। ऋषिकेश के बाद पहाड़ी रास्ते शुरू हो गए। घुमावदार सड़कें, ऊँचे–ऊँचे पर्वत, झरने और अलकनंदा नदी की कल–कल ध्वनि पूरे मार्ग को मनमोहक बना रही थी।

यात्रा के दौरान हम देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग और जोशीमठ जैसे महत्वपूर्ण स्थानों से होकर गुजरे। रास्ते में कई स्थानों पर हमने विश्राम किया, स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लिया और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद उठाया। परिवार के सभी सदस्य उत्साहित थे। कार में गाने सुनते हुए, बातचीत करते हुए और हँसी–मजाक करते हुए समय का पता ही नहीं चला।

जब हम बद्रीनाथ पहुँचे तो चारों ओर बर्फ से ढकी पर्वत चोटियों और ठंडी हवा ने हमारा स्वागत किया। बद्रीनाथ मंदिर की भव्यता और वहाँ का शांत वातावरण मन को एक अलग ही सुकून दे रहा था। मंदिर में भगवान बद्रीविशाल के दर्शन कर मन श्रद्धा और भक्ति से भर गया। वहाँ कुछ समय बिताकर ऐसा लगा मानो सारी थकान दूर हो गई हो।

दर्शन के बाद हमने तप्तकुंड में स्नान किया और पास स्थित माना गाँव भी देखा, जिसे भारत का अंतिम गाँव कहा जाता है। वहाँ स्थित भीम पुल और सरस्वती नदी का दृश्य बेहद आकर्षक था। स्थानीय लोगों की सरलता और पहाड़ी जीवन को देखकर भी बहुत अच्छा लगा।

कुछ दिनों के बाद हम अनेक सुंदर यादों के साथ दिल्ली लौट आए। इस यात्रा ने हमें प्रकृति की सुंदरता, आध्यात्मिक शांति और परिवार के महत्व का अनुभव कराया। परिवार के साथ बिताए गए वे पल आज भी हमारी स्मृतियों में ताज़ा हैं।

दिल्ली से बद्रीनाथ की यह कार यात्रा मेरे जीवन की सबसे सुखद, प्रेरणादायक और यादगार यात्राओं में से एक रही, जिसे मैं हमेशा संजोकर रखूँगी।

सीमा रानी
अपर महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

कंपनी सचिव की नियुक्ति और भूमिका



कंपनी सचिव का पद आधुनिक कॉर्पोरेट संरचना में एक अनिवार्य अंग है। यह केवल विधिक आवश्यकता नहीं, बल्कि कंपनी के संचालन में अनुशासन, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने का माध्यम है। कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 203 तथा कंपनी (प्रबंधकीय कार्मिक की नियुक्ति और पारिश्रमिक) नियम, 2014 के नियम 8 और 8ए के अनुसार, प्रत्येक सूचीबद्ध कंपनी तथा प्रत्येक सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की कंपनी जिसकी भुगतान की गई पूंजी ₹ 10 करोड़ या उससे अधिक है, को पूर्णकालिक कंपनी सचिव नियुक्त करना आवश्यक है। इस प्रावधान का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कंपनियाँ अपने संचालन में विधिक अनुपालन और कॉर्पोरेट गवर्नेंस को सर्वोच्च प्राथमिकता दें।

डीपीई द्वारा जारी कॉर्पोरेट गवर्नेंस दिशा–निर्देश भी कंपनी सचिव की भूमिका को विशेष महत्व देते हैं। इन दिशा–निर्देशों में स्पष्ट किया गया है कि कंपनी सचिव निदेशक मंडल और प्रबंधन के बीच सेतु हैं, जो कंपनी की गतिविधियों को पारदर्शी और उत्तरदायी बनाते हैं।

विधिक अनुपालन

कंपनी सचिव की सबसे प्रमुख जिम्मेदारी विधिक अनुपालन सुनिश्चित करना है। वे यह देखते हैं कि कंपनी अधिनियम, डीपीई द्वारा जारी कॉर्पोरेट गवर्नेंस दिशा–निर्देश, और अन्य लागू कानूनों का पालन हो। वार्षिक रिटर्न दाखिल करना, बोर्ड संकल्पों का संधारण करना, वैधानिक अभिलेखों को अद्यतन रखना और नियामक संस्थाओं को समय पर रिपोर्ट प्रस्तुत करना उनकी जिम्मेदारी होती है। इस प्रकार, कंपनी सचिव कंपनी को विधिक जोखिमों से बचाते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि कंपनी की गतिविधियाँ कानून के अनुरूप हों।

निदेशक मंडल सहयोग

कंपनी सचिव निदेशक मंडल के सहयोगी होते हैं। उन्हें निदेशक मंडल द्वारा नियुक्त किया जाता है, और वे बोर्ड बैठकों का आयोजन करते हैं, कार्यसूची तैयार करते हैं तथा यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी निर्णय विधिवत अभिलेखित हों। वे निदेशकों को विधिक और प्रशासनिक परामर्श प्रदान करते हैं, जिससे बोर्ड के निर्णय अधिक प्रभावी और पारदर्शी बनते हैं। इस प्रकार, कंपनी सचिव बोर्ड और प्रबंधन के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करते हैं।

कॉर्पोरेट गवर्नेंस

कॉर्पोरेट गवर्नेंस किसी भी कंपनी की साख और विश्वसनीयता का आधार है। कंपनी सचिव इस क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। वे पारदर्शिता, नैतिकता और उत्तरदायित्व को बढ़ावा देते हैं। वे यह सुनिश्चित करते हैं कि कंपनी की गतिविधियाँ न केवल कानून के अनुरूप हों, बल्कि हितधारकों के विश्वास को भी बनाए रखें। डीपीई के दिशा–निर्देशों के अनुसार, कंपनी सचिव को कॉर्पोरेट गवर्नेंस का प्रहरी माना जाता है।

शेयरधारक संबंध

कंपनी सचिव निवेशकों और शेयरधारकों के हितों की रक्षा करते हैं। वे लाभांश वितरण की प्रक्रिया को सुचारु बनाते हैं, शेयर प्रमाणपत्रों पर हस्ताक्षर करते हैं और निवेशकों के प्रश्नों का समाधान करते हैं। इस प्रकार, वे कंपनी और उसके निवेशकों के बीच विश्वास का वातावरण बनाए रखते हैं।

नियामक संवाद

कंपनी सचिव मंत्रालयों, नियामक संस्थाओं और अन्य सरकारी निकायों के साथ आवश्यक संचार स्थापित करते हैं। वे कंपनी का प्रतिनिधित्व नियामक मंचों पर करते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि कंपनी की गतिविधियाँ सभी नियामक आवश्यकताओं के अनुरूप हों।

दंड प्रावधान

कंपनी सचिव की नियुक्ति कंपनी अधिनियम, 2013 के अंतर्गत एक वैधानिक आवश्यकता है। यदि कोई कंपनी इस प्रावधान का पालन नहीं करती है तो उस पर ₹5,00,000 तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक निदेशक या प्रमुख प्रबंधकीय व्यक्ति पर ₹50,000 का जुर्माना तथा अनुपालन न होने की स्थिति में प्रतिदिन ₹1,000 का जुर्माना (अधिकतम ₹5,00,000 तक) लगाया जा सकता है। यह दंड कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 203(5) के अंतर्गत निर्धारित है और इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कंपनियाँ विधिक अनुपालन को गंभीरता से लें तथा सुचारु और पारदर्शी प्रशासनिक व्यवस्था बनाए रखें।

निष्कर्ष

कंपनी सचिव की नियुक्ति केवल कानूनी आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह कंपनी की दीर्घकालिक सफलता, साख और विश्वसनीयता का आधार है। उनकी स्वतंत्र भूमिकाएँ कंपनी को विधिक जोखिमों से बचाती हैं, प्रबंधन को सुचारु बनाती हैं और कॉर्पोरेट गवर्नेंस को सुदृढ़ करती हैं। कंपनी सचिव को कॉर्पोरेट गवर्नेंस का प्रहरी कहा जाता है, और उनकी नियुक्ति कंपनी की पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करती है।

सचिन अग्रवाल,
कंपनी सचिव

****

खुद वह बदलाव बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं



हमारे राष्ट्रपिता का दिया हुआ कथन वर्षों से हम जानते हैं।
खुद वह बदलाव बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।।

उनकी इस समझ से हम आज कहां से कहां आ गए।
कैद को तोड़कर हम सारी दुनिया पर छा गए।।

सत्य और अहिंसा जैसे आदर्शों से हमने आज़ादी को पा लिया।
शुरुआत कर एक सीरा उन्होंने जन जन को थमा दिया।।

सीखा हमने कि बदलाव की इस लौ को हमें पहले खुद से ही जलाना होगा।
रौशन होगा जहां तभी जब मशाल को मंजिल तक मिलकर पहुंचाना होगा।।

खुद की जिम्मेदारी का उन्होंने सब को पाठ पढ़ाया है।
कैसे बूंद बूंद से है घट भरता, यह सामूहिक दृष्टिकोण भी सिखाया है।।

ज़रूरी नहीं कि इस राह पर चलना आसान होगा।
पर कर हौंसला बुलंद कदमों को तो बढ़ाना होगा।।

धैर्य और साहस को बना साथी सबको प्रेरित करना होगा।
इस राह पर इक छोटा कदम भी तुम्हारा सकारात्मक बदलाव में सहायक होगा।।

शिक्षा को बना स्रोत ताल से ताल को मिलाना होगा।
अच्छे और बुरे के फर्क से भी तो जागरूक करवाना होगा।

ईमानदारी और सत्यनिष्ठा को अपने आचरण में अपनाना होगा।
तभी संभव है विकास देश का, नहीं तो खुद से खुद का रिश्ता ही बेइमाना होगा।।

अपने अंतर्मन में भी ज्ञान की ज्योति को जगाना होगा।
फैलाना है अगर प्रकाश तो दीपक बन अंधेरों को तो मिटाना होगा।।

चाहते हैं गर सुख की तो औरों का दुख में साथ भी निभाना होगा।
बनना पड़ेगा वह आइना, जिसका प्रतिबिंब यह ज़माना होगा।।

अपना संपूर्ण परिवर्तन ही, देश की प्रगति में बनेगा छोटा सा योगदान।
सच ही कहा है कि एक छोटा दीया भी सूर्य के समान होता है प्रकाशमान।।

अंत में कहना है कि इसे मत समझें बस इक विचार।
अपने कर्म की देकर ताकत इसे बनालो अपने जीवन का आधार।।

रखो सम्मान इस अनमोल कथन का जिसे सब जानते हैं।
और बन जाओ बदलाव जिसे दुनिया में देखना चाहते हैं।।

मीनाक्षी बालानी
पत्नी/श्री एस.एस. बालानी
संयुक्त महाप्रबंधक (तकनीकी सहायता)

सहचर



मैं चला था अकेला,
कारवां न बना पाया,
इस आशा में था,
लोग बढ़ेंगे,
क्या पता था,
वो न मिलेंगे।

मुझे तकलीफ थी,
न बढ़ने की, न साथ हो जाने की,
अकेला, मायूस, अल्हड़,
आखिर किस की कमी थी,
हमसफर, हमराही
या मददगार,
किसकी खोज में था,

जो मिले, वो बस खुद को पसंद करते,
मैं था, खुद में पसंद करता।

दिन बीत जाते, एक पथिक की राह में,
जो मुझसे, उन पत्तो की,
वो सड़क के गड़ढो की,
कहानियां सुनाता,

अफसोस, वीरान रेगिस्तान के अलावा,
कुछ न दिखा, कोई न मिला।

ठहर ठहर, वो रात, न बीती थी
सिहर सिहर, वो बात न निकलती थी
आखिर,
वो एक रात आई,
अठाईस मील चलने के बाद,
अपने संग बहार लाई,
यू लगा,

कितने दिनों बाद
मैंने खुद को देखा हो,
वो बड़ी बड़ी आंखें,
गोल सा चेहरा,
सांवल शरीर, लगे फ़क़ीर,
मदमस्त, अल्हड़, तेजस्वी,
मुझ जैसी।

समय बीता,
हम चल पड़े,
दिन ढले, और
रातों ने ली करवटें।

जगमग जगमग, वो रातें
जुगनुओं के आड़ में,
मद्धम मद्धम, वो बातें
उसकी राह में।

किस तरह बनाया,
किस तरह संजोया,
उन हसीन रातों को,
तुम्हारी बातों को,
यह अब सुकून देता है।

पथ अब लगते है अपने,
पथिक अब पहचान में है आते,
अब सबकुछ,
कहानियों से लेकर किस्सों तक,
पथिकों से लेकर सड़क के गड़ढों तक,
आबाद लगता है।

व्योम त्रिपाठी शिवम
प्रबंधक (विधि)

अहिंसा से सह–अस्तित्व तक



भगवान महावीर का संदेश : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

मानव सभ्यता के विकास–क्रम में समय–समय पर ऐसे महापुरुषों का अवतरण हुआ है, जिन्होंने समाज को सत्य, करुणा और मानवता का पथ दिखाया। उन्हीं दिव्य विभूतियों में भगवान महावीर का स्थान अत्यंत उच्च और प्रेरणादायी है। वे केवल जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर ही नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए शांति, अहिंसा और सह–अस्तिव के शाश्वत संदेशवाहक हैं। उनका 'जियो और जीने दो' का सिद्धांत आज के जटिल, तनावपूर्ण और संघर्षपूर्ण युग में और अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है।

आधुनिक युग और महावीर का दर्शन

वर्तमान युग विज्ञान, तकनीक और भौतिक प्रगति की चरम उपलब्धियों का साक्षी है। मानव ने विकास की अभूतपूर्व ऊँचाइयों को प्राप्त किया है, किंतु इस प्रगति के समानांतर समाज में असहिष्णुता, हिंसा, स्वार्थ और मानसिक तनाव भी निरंतर बढ़ता जा रहा है। आज का मनुष्य अपनी सफलता और आकांक्षाओं की अंधी प्रतिस्पर्धा में इतना डूब गया है कि वह मानवीय संवेदनाओं और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा करने लगा है। ऐसे परिदृश्य में भगवान महावीर का 'जियो और जीने दो' का सिद्धांत मानवता को संतुलन, संयम और सह–अस्तिव का मार्ग दिखाता है।

पर्यावरण संतुलन और जीव–दया

भगवान महावीर का दर्शन केवल मानव समाज तक सीमित नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण चराचर जगत को अपने भीतर समेटे हुए हैं। वे प्रत्येक जीव के प्रति करुणा, दया और अहिंसा के प्रबल पक्षधर थे। उनका स्पष्ट मानना था कि इस धरती पर प्रत्येक जीव को जीने का समान अधिकार है। आज जब वैश्विक स्तर पर पर्यावरण प्रदूषण, वनों का विनाश, जलवायु परिवर्तन और जैव–विविधता का संकट गंभीर रूप ले चुका है, तब महावीर का यह दर्शन प्रकृति संरक्षण के लिए एक अचूक मार्गदर्शिका बनता है। यदि मनुष्य ''जियो और जीने दो'' की भावना को अंतर्मन से अपनाए, तो प्रकृति के साथ सामंजस्य और संतुलन स्थापित किया जा सकता है।

वैश्विक संघर्ष और अहिंसा की आवश्यकता

वर्तमान विश्व अनेक क्षेत्रों में संघर्ष और युद्ध की विभीषिका से ग्रस्त है। मध्य पूर्व (Middle East) में जारी तनावपूर्ण परिस्थितियाँ तथा रूस–यूक्रेन युद्ध ने मानवता को गहरे घाव दिए हैं।, लाखों जिंदगियों को तबाह कर दिया है। इन युद्धों के कारण असंख्य निर्दोष नागरिकों को विस्थापित होना पड़ा है, हजारों मासूमों की जानें गई हैं और मानवीय संवेदनाओं को गहरा आघात पहुंचा है। ऐसी परिस्थितियों में भगवान महावीर का अहिंसा और सह–अस्तित्व का सिद्धांत वैश्विक समाधान के रूप में उभरता है। यह सिखाता है कि किसी भी विवाद का स्थायी समाधान हिंसा, हथियारों या युद्ध में नहीं, बल्कि संवाद, सहिष्णुता और परस्पर सम्मान में निहित है।

यदि विश्व के समस्त राष्ट्र और महाशक्तियाँ अपने अहंकार को छोड़कर महावीर के करुणा व मानव कल्याण के आदर्शों को अपनाएं, तो भू–राजनीतिक संघर्षों की जगह सहयोग, वैश्विक भाईचारे और शांति का वातावरण निर्मित हो सकता है।

सामाजिक सौहार्द और आत्मसंयम

वर्तमान सामाजिक जीवन में भी भगवान महावीर के उपदेश संजीवनी के समान हैं। आज छोटी–छोटी बातों पर असंतोष,

कटुता और हिंसा आम हो गई है। सोशल मीडिया से लेकर सार्वजनिक जीवन तक में धैर्य और सहनशीलता का घोर अभाव दिखाई देता है। ऐसे दौर में महावीर का अहिंसा, संयम और अनेकांतवाद (दूसरों के विचारों का सम्मान करना) का संदेश समाज में सौहार्द की भावना को मजबूत कर सकता है। 'जियो और जीने दो' का वास्तविक अर्थ यही है कि हम स्वयं भी शांतिपूर्ण और मर्यादित जीवन जिएं और दूसरों को भी सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार और स्वतंत्रता दें।

इसके साथ ही, महावीर ने आत्मसंयम और सादगीपूर्ण जीवन पर विशेष बल दिया। आज के उपभोक्तावादी और दिखावे के युग में मनुष्य भौतिक वस्तुओं के पीछे भागते हुए अपनी मानसिक शांति से दूर होता जा रहा है, जबकि वास्तविक सुख बाहरी वस्तुओं के संग्रह में नहीं, बल्कि मन की शांति और भीतर के संतोष में है।

समापन विचार

आज के अशांत और संघर्षपूर्ण समय में भगवान महावीर का 'जियो और जीने दो' का संदेश संपूर्ण मानवता के लिए आशा की एक किरण और अचूक मार्गदर्शन है। यह केवल एक धार्मिक सिद्धांत नहीं, बल्कि एक सार्वभौमिक जीवन–दर्शन है, जो व्यक्ति, समाज और विश्व–तीनों स्तरों पर संतुलन और शांति स्थापित करने की क्षमता रखता है। यदि हम उनके इन शाश्वत सिद्धांतों को अपने जीवन में आत्मसात करें, तो एक ऐसे समाज का निर्माण संभव है जहाँ सम्मान, सद्भाव और मानवीय संवेदनाएँ सर्वोपरि हों। यही भगवान महावीर के संदेश की वास्तविक सार्थकता और कालजयी प्रासंगिकता है।

अभिनंदन जैन
उप प्रबंधक (तकनीकी)

सपने



यह सपने हैं जिनके कारण मैं कुछ कर नहीं पाता,
पर यह सपने ही है, जिनके कारण मैं हर रोज़ ज़िंदा रह पाता।

यह सपने ही है, जिनके कारण मैं सुबह उठ नहीं पाता।
पर यह सपने ही हैं, जिनके कारण मैं रात में सो नहीं पाता।

यह सपने ही है जिनके कारण मेरी आँखें खुल नहीं पाती,
पर यह सपने ही हैं, जिनको मैं अपनी खुली आँखों से देख पाता।

यह सपने ही हैं जो चरित्रहीन बनाते हैं।
पर यह सपने ही हैं जिनके कारण मैं चरित्रवान बन पाया।

इन सपनों ने ही मुझे अपनी आंखों में झुकाया है,
पर यह सपने ही हैं जिनके कारण मैं अपनी आंखों से नज़र मिला पाया।

सपने बुरे भी हैं, सपने अच्छे भी हैं,
यह सपने देखने वाले की नज़र का नज़रिया हैं बस...

मयंक अग्रवाल
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (अनुसंधान एवं विकास)

आओ जाने भारत के स्मारक सिक्कों के बारे में



आमतौर पर सिक्कों को दो भागों में देखा जा सकता है, वह क्रमशः इस प्रकार हैं :

परिचालित सिक्के (Circulation Coin) : सिक्का से अभिप्राय ऐसे किसी सिक्के से है जो किसी धातु या अन्य किसी पदार्थ से बना हो, जिसे सरकार या सरकार द्वारा इस संबंध में अधिकृत किसी अन्य प्राधिकरण द्वारा मुद्रांकित किया गया हो, और जो वैध मुद्रा (Legal Tender) हो। यह सिक्के नियमित जारी सामान्य सिक्के हैं जिनका उपयोग हर दिन वाणिज्य में किया जाता है।	
स्मारक सिक्का (Commemorative Coin): 'स्मारक सिक्का' से अभिप्राय ऐसे किसी सिक्के से है जिसे सरकार या सरकार द्वारा इस संबंध में अधिकृत किसी अन्य प्राधिकरण द्वारा किसी विशेष अवसर या घटना की स्मृति में जारी किया गया हो तथा जिसका मूल्य भारतीय मुद्रा में व्यक्त किया गया हो।	

स्मारक सिक्का

यह सिक्के आज़ाद भारत में वर्ष 1964 से बाजार में सक्रिय हैं। भारत में सबसे पहला स्मारक सिक्का सन 1964 में भारत के सबसे पहले माननीय प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू जी की मृत्यु पर ढाला गया था। उसके बाद से अभी तक 240 से ज्यादा स्मारक सिक्के ढाले जा चुके हैं। स्मारक सिक्के प्रायः महान व्यक्तित्वों की जयंती अथवा पुण्यतिथि, महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दिवसों एवं घटनाओं तथा राष्ट्रहित एवं समाजोपयोगी कार्यों की स्मृति एवं सम्मान में जारी किए जाते हैं। इसके लिए भारत सरकार द्वारा टकसाल (mint) को ढालने के लिए कहा जाता है और प्रत्येक स्मारक सिक्के के लिए भारत का राजपत्र (Gazette Notification) निकलता है जो कि उस सिक्के से संबंधित हर जानकारी देता है।

स्मारक सिक्के के बारे में जानने योग्य बातें:

इस सिक्के के दो भाग होते है जो की क्रमशः इस प्रकार हैं:

अग्र भाग (Obverse Side)

सिक्के के इस भाग पर मध्य में अशोक स्तम्भ का सिंह स्तम्भ शीर्ष पर होता हैं, जिसके नीचे 'सत्यमेव जयते' लेख उत्कीर्णित होता है, इसकी बाईं परिधि पर देवनागरी लिपि में 'भारत' शब्द और दाईं परिधि पर अंग्रेजी में "INDIA" शब्द होता है। सिंह स्तम्भ शीर्ष के नीचे रुपये का प्रतीक "₹" और अंर्तराष्ट्रीय अंकों में अंकित मूल्य भी होता है।



पृष्ट भाग (Reverse Side)



सिक्के के इस भाग पर उस व्यक्ति/भवन/स्मारक/घटना इत्यादि की छवि होती है जिस पर इस सिक्के को स्मरण किया जाना है।

हर सिक्का निम्न विशेषता रखता है–

- मूल्य वर्ग (Denomination) : यह सिक्के पर इस स्मारक सिक्के की अंकित मूल्य है।
- आकार और बाह्य व्यास (ShapeAnd Outer Diameter) : इसका आम तौर पर आकार वृताकर होता है और बाह्य व्यास 44 मिमी होता हैं।
- दांतेदार किनारे की संख्या (SeÙkation) : दांतेदार किनारे इस सिक्के की एक सुरक्षा विशेषता होती है।
- धातु संयोजन (Composition) : आम तौर पर ये सिक्के बहुमूल्य मिश्र धातु से बने होते है।

स्मारक सिक्के फिलहाल दो रूप में मिलते हैं वे निम्न हैं:

(i) **प्रूफ सिक्के (Proof Coins):** प्रूफ सिक्के अत्यधिक उच्च गुणवत्ता वाले फिनिश के होते हैं। भारतीय प्रूफ सिक्का सेटों में समतल (plain) भाग पर मिरर फिनिश होता है, जबकि डिजाइन या विषय क्षेत्र पर फ्रॉस्टेड (frosted) फिनिश होता है। ये सिक्के उच्चतम ग्रेड की गुणवत्ता प्राप्त करने हेतु हाथ से तैयार किए जाते हैं तथा इनमें अत्यंत उत्कृष्ट दर्पण–सदृश चमक होती है।	
(ii) **यूएनसी सिक्के (UNC Coins):** इन सिक्कों पर मिरर–फिनिश होता है। इनकी गुणवत्ता प्रूफ सिक्कों की तुलना में सामान्य होती है तथा इनका मूल्य प्रूफ सिक्कों से कम होता है।	

वर्ष 2025 में पहली बार रंगीन (coloured) स्मारक सिक्के जारी किए गए हैं। अब तक केवल दो ऐसे सिक्के जारी किए गए हैं, जो इस प्रकार हैं:

- मेक इन इंडिया की 10वीं वर्षगांठ / 10thAnniversary of make in india.
- भारतीय रेल में विद्युतीकरण के 100 वर्ष / 100 Years of Electricfication in Indian Railways.

सुरेश कुमार अरथोली
उप प्रबंधक (तकनीकी)

हर्षिल घाटी : जहाँ हिमालय अपनी सबसे शांत भाषा में बोलता है



"कुछ स्थान केवल देखे नहीं जाते, उन्हें महसूस किया जाता है।"

उत्तराखंड के उत्तरकाशी जनपद में, समुद्र तल से लगभग 2,620 मीटर की ऊँचाई पर, भागीरथी नदी के तट पर बसी हर्षिल घाटी हिमालय की उन दुर्लभ वादियों में से एक है जहाँ प्रकृति आज भी अपने मूल स्वरूप में दिखाई देती है। देवदार और भोजपत्र के घने वन, बर्फ से आच्छादित पर्वत श्रृंखलाएँ, सेब के बागान, पारंपरिक हिमालयी गाँव और भागीरथी की निर्मल धारा मिलकर ऐसा वातावरण निर्मित करते हैं जो किसी भी प्रकृति प्रेमी के मन को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

गंगोत्री धाम से लगभग 25 किलोमीटर पहले स्थित यह क्षेत्र वर्षों तक मुख्यधारा के पर्यटन से अपेक्षाकृत दूर रहा। शायद यही कारण है कि आज भी यहाँ पहुँचने पर पहाड़ों की वह सहजता और प्राकृतिक सौंदर्य महसूस होता है, जो कई लोकप्रिय पर्वतीय स्थलों पर धीरे–धीरे दुर्लभ होता जा रहा है। हर्षिल में न तो बड़े बाज़ारों की भीड़ है और न ही पर्यटकों का शोर; यहाँ का सबसे बड़ा आकर्षण इसकी शांति है।

प्रकृति और संस्कृति का अनूठा संगम

हर्षिल केवल एक गाँव नहीं, बल्कि एक संपूर्ण हिमालयी सांस्कृतिक क्षेत्र है। इसके आसपास बसे मुखवा, धराली, बगोरी, झाला और अन्य छोटे गाँव इस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखते हैं। यहाँ गढ़वाली संस्कृति के साथ–साथ जाड़ भोटिया समुदाय की परंपराओं की झलक भी देखने को मिलती है, जिन्होंने सदियों तक भारत–तिब्बत व्यापार मार्ग से जुड़े जीवन को जिया।

बगोरी गाँव आज भी पारंपरिक पत्थर और लकड़ी के घरों, स्थानीय रीति–रिवाजों तथा सरल जीवनशैली के लिए जाना जाता है। इन गाँवों में घूमते हुए ऐसा अनुभव होता है जैसे समय ने अपनी गति कुछ धीमी कर दी हो।

माँ गंगा का शीतकालीन निवास

हर्षिल क्षेत्र का धार्मिक महत्व भी अत्यंत विशिष्ट है। यहाँ स्थित मुखवा गाँव को माँ गंगा का शीतकालीन निवास माना जाता है। प्रत्येक वर्ष दीपावली के पश्चात् जब गंगोत्री धाम के कपाट शीतकाल के लिए बंद हो जाते हैं, तब माँ गंगा की उत्सव डोली विधिवत मुखवा लाई जाती है और अगले छह माह तक पूजा–अर्चना यहीं संपन्न होती है।

आस्था और प्रकृति का ऐसा अद्भुत संगम हिमालयी संस्कृति की विशेष पहचान है। इसी कारण अनेक श्रद्धालु केवल गंगोत्री ही नहीं, बल्कि मुखवा के दर्शन हेतु भी यहाँ आते हैं।

पहाड़ी विल्सन और सेबों की कहानी

हर्षिल के इतिहास का उल्लेख "पहाड़ी विल्सन" के बिना अधूरा माना जाता है। उन्नीसवीं शताब्दी में फ्रेडरिक ई. विल्सन नामक एक अंग्रेज इस क्षेत्र में आया और यहीं बस गया। स्थानीय इतिहास में उसे "राजा विल्सन" या "पहाड़ी विल्सन" के नाम से जाना जाता है। माना जाता है कि उसने इस क्षेत्र में सेब की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा दिया, जिसने आगे चलकर स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई दिशा प्रदान की।

आज भी धराली और हर्षिल क्षेत्र के सेब अपनी गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध हैं। शरद ऋतु में जब बागानों में लाल–लाल सेब लदे होते हैं, तब पूरी घाटी का दृश्य अत्यंत मनोहारी हो उठता है।

हर मौसम में नया रूप

हर्षिल की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक है कि प्रत्येक ऋतु इसे नया व्यक्तित्व प्रदान करती है।

वसंत और ग्रीष्म ऋतु में घाटी हरियाली और रंग–बिरंगे जंगली फूलों से भर उठती है। वर्षा ऋतु में बादल और पर्वत मानो एक–दूसरे से संवाद करते प्रतीत होते हैं। शरद ऋतु स्वच्छ आकाश और हिमालय की दूरस्थ चोटियों के अदभुत दृश्यों के लिए जानी जाती है, जबकि शीतकाल में पूरी घाटी बर्फ की सफेद चादर ओढ़कर किसी चित्रकथा का दृश्य बन जाती है।

प्रकृति के इन बदलते रंगों के कारण वर्ष भर यहाँ का आकर्षण बना रहता है।

प्रकृति प्रेमियों का स्वर्ग

हर्षिल रोमांच और शांति दोनों का संतुलित अनुभव प्रदान करता है। यहाँ प्रकृति भ्रमण, पक्षी अवलोकन, छायांकन तथा आसपास के पैदल मार्गों पर छोटी यात्राएँ की जा सकती हैं। निकट स्थित सात ताल, लामा टॉप और अन्य पर्वतीय पथ प्रकृति प्रेमियों के बीच विशेष लोकप्रिय हैं।

किन्तु हर्षिल का वास्तविक आनंद किसी गतिविधि में नहीं, बल्कि उसकी नीरवता में छिपा है। भागीरथी नदी के किनारे बैठकर बहते जल को निहारना, देवदार के वृक्षों के बीच टहलना अथवा हिमालय की चोटियों पर उगते सूरज को देखना स्वयं में एक अविस्मरणीय अनुभव है।

स्थानीय जीवन और पहाड़ी स्वाद

हर्षिल की यात्रा स्थानीय भोजन के बिना अधूरी मानी जाती है। गहत की दाल, मंडुवे की रोटी, भांग की चटनी, झंगोरे की खीर और पहाड़ी राजमा यहाँ के पारंपरिक व्यंजनों की पहचान हैं। यदि अवसर मिले तो बुरांश का शरबत अवश्य चखना चाहिए, जो स्थानीय लोगों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है।

यहाँ के छोटे–छोटे गृह–आवास (होमस्टे) यात्रियों को केवल रहने की सुविधा ही नहीं, बल्कि स्थानीय संस्कृति को निकट से समझने का अवसर भी प्रदान करते हैं।

हिमालय और हमारी जिम्मेदारी

हाल के वर्षों में उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों ने जलवायु परिवर्तन, अनियमित वर्षा और भूस्खलन जैसी चुनौतियों का सामना किया है। हर्षिल और उसके आसपास के क्षेत्र भी इन परिवर्तनों से अछूते नहीं रहे हैं। इसलिए जब हम हिमालय की सुंदरता का आनंद लेने जाएँ, तो उसके संरक्षण की जिम्मेदारी को भी समझना आवश्यक है।

स्वच्छ पर्यटन, प्लास्टिक–मुक्त यात्रा और स्थानीय संस्कृति के प्रति सम्मान ही ऐसे संवेदनशील क्षेत्रों को सुरक्षित रखने का सबसे प्रभावी माध्यम है।

एक अनुभव, जो साथ लौटता है

आज जब पर्यटन का अर्थ अक्सर भीड़, शोर और त्वरित मनोरंजन तक सीमित हो गया है, तब हर्षिल एक अलग अनुभव प्रदान करता है। यह हमें याद दिलाता है कि प्रकृति का सबसे सुंदर रूप अक्सर मौन में छिपा होता है।

भागीरथी की अविरल धारा, देवदार की सुगंध, हिमालय की शांत चोटियाँ और पहाड़ों का सरल जीवन मिलकर ऐसा वातावरण रचते हैं, जो केवल आँखों से नहीं, बल्कि मन से देखा जाता है।

हर्षिल घाटी कोई पर्यटन स्थल भर नहीं है; यह हिमालय की गोद में ठहरी हुई वह शांत साँस है, जो जीवन की भागदौड़ के बीच हमें कुछ पल रुककर प्रकृति को सुनने का अवसर देती है।

अनुराग शर्मा
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

सब कुछ बनने की चाह में कहीं खुद को तो नहीं खो रहे हम?



"दुनिया आपको बताती है कि आप कुछ भी बन सकते हैं,
लेकिन इसी कोशिश में हम अक्सर यह भूल जाते हैं कि हम वास्तव में कौन हैं।"

विकल्पों की दुनिया और बढ़ती उलझन

आज का समय अवसरों और विकल्पों से भरा हुआ है। पहले लोगों के सामने जीवन के कुछ ही रास्ते होते थे, लेकिन आज हर दिन हमारे सामने नए विकल्प खड़े हो जाते हैं। करियर से लेकर रिश्तों तक, रहने की जगह से लेकर जीवनशैली तक हर चीज़ के अनगिनत विकल्प मौजूद हैं।

सुनने में यह बहुत अच्छा लगता है। लगता है कि हमारे पास पूरी आज़ादी है। लेकिन कई बार यही आज़ादी हमारे लिए उलझन बन जाती है। जब हर रास्ता अच्छा दिखाई देने लगे, तब किसी एक रास्ते को चुनना मुश्किल हो जाता है।

जब दिन की शुरुआत अपनी नहीं, दूसरों की जिंदगी से होती है

आज सुबह उठते ही हममें से अधिकांश लोग सबसे पहले मोबाइल देखते हैं। हमारी आँखें सूरज की रोशनी से पहले स्क्रीन की रोशनी से मिलती हैं। कुछ ही मिनटों में हम दर्जनों लोगों की जिंदगी देख चुके होते हैं किसी की नई नौकरी, किसी की विदेश यात्रा, किसी की सफलता, किसी का खुशहाल परिवार।

धीरे–धीरे यह आदत हमारे सोचने का तरीका बदल देती है। हम अपने दिन की शुरुआत अपनी जरूरतों और भावनाओं से नहीं, बल्कि दूसरों की उपलब्धियों से करने लगते हैं। अनजाने में हम अपनी तुलना उन लोगों से करने लगते हैं जिनकी पूरी कहानी हमें पता भी नहीं होती।

तुलना का यह अंतहीन खेल

सोशल मीडिया पर दिखाई देने वाली जिंदगी अक्सर किसी फिल्म के चुनिंदा दृश्यों जैसी होती है। वहाँ मुस्कानें दिखती हैं, संघर्ष नहीं। उपलब्धियाँ दिखती हैं, असफलताएँ नहीं। लेकिन हम अपनी पूरी जिंदगी की तुलना किसी और की चुनी हुई झलकियों से करने लगते हैं।

यहीं से असंतोष जन्म लेता है। हमें लगने लगता है कि शायद हम पीछे छूट गए हैं। जो हमारे पास है, उसकी खुशी कम होने लगती है और जो हमारे पास नहीं है, उसकी कमी ज्यादा दिखाई देने लगती है।

अधूरी संभावनाओं का बोझ

आज का युवा केवल अपने वर्तमान को नहीं जी रहा, बल्कि सैकड़ों संभावित जीवनों का बोझ भी अपने साथ ढो रहा है। वह सोचता है कि अगर यह करियर चुनता तो क्या होता, अगर उस शहर में चला जाता तो क्या होता, अगर किसी और निर्णय पर चलता तो शायद जिंदगी बेहतर होती।

यह सोच धीरे–धीरे मन को थका देती है। इंसान वर्तमान में रहते हुए भी कहीं और जीने लगता है। वह हर समय किसी बेहतर संभावना की तलाश में रहता है और इसी तलाश में वर्तमान की सुंदरता उससे छूटती जाती है।

हम क्या चाहते हैं, यह पूछना क्यों भूल गए?

एक समय था जब हम अपने मन की सुनते थे। हमें पता होता था कि हमें क्या अच्छा लगता है, किस काम में आनंद

आता है, किन लोगों के साथ हम सहज महसूस करते हैं। लेकिन अब अक्सर हम यह सोचने लगे हैं कि कौन–सा विकल्प अधिक प्रभावशाली लगेगा, कौन–सा रास्ता ज्यादा प्रतिष्ठा देगा और लोग किस निर्णय की ज्यादा प्रशंसा करेंगे। धीरे–धीरे हम अपनी इच्छाओं की जगह समाज की अपेक्षाओं के अनुसार जीवन जीने लगते हैं।

जीवन विकल्पों से नहीं, प्रतिबद्धता से बनता है

कई बार हमें लगता है कि अगर हमारे पास और विकल्प होंगे तो हम ज्यादा खुश रहेंगे। लेकिन सच्चाई यह है कि जीवन की गहराई विकल्पों की संख्या से नहीं, बल्कि किसी एक रास्ते के प्रति हमारे समर्पण से बनती है। कोई भी रिश्ता, कोई भी सपना, कोई भी उपलब्धि समय और धैर्य मांगती है। बार–बार दिशा बदलने से मंजिल नहीं मिलती। बीज को बार–बार मिट्टी से निकालकर देखने से वह पेड़ नहीं बनता।

जीवन में कुछ सुंदर चीजें केवल उन्हीं को मिलती हैं जो रुकना, इंतजार करना और निभाना जानते हैं।

अपने बगीचे की ओर लौटने का समय

हममें से कई लोग दूसरों के जीवन को देखते–देखते अपने जीवन से दूर हो गए हैं। हम दूसरों के सपनों को इतना देखने लगे हैं कि अपने सपनों की आवाज़ सुनना मुश्किल हो गया है। लेकिन अभी भी देर नहीं हुई है। हमें अपने जीवन की ओर लौटना होगा। अपने अधूरे कामों, अपने छोटे–छोटे सपनों और उन रिश्तों की ओर, जो हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। हमें अपने ही बगीचे की देखभाल करनी होगी। क्योंकि जो फल हमारे हिस्से के हैं, वे किसी और के बगीचे में नहीं उगेंगे।

साधारण जीवन भी सुंदर होता है

आज की दुनिया हमें लगातार असाधारण बनने के लिए प्रेरित करती है। लेकिन जीवन का अर्थ केवल बड़ी उपलब्धियों में नहीं छिपा होता। कभी परिवार के साथ बिताया गया समय, किसी मित्र से हुई सच्ची बातचीत, किसी शाम का शांत अकेलापन, किसी किताब के साथ गुज़ारे गए कुछ घंटे या बिना किसी कारण महसूस की गई खुशी भी जीवन को अर्थ देती है।

हर सुंदर चीज़ को प्रसिद्ध होने की आवश्यकता नहीं होती। हर जीवन को असाधारण दिखने की आवश्यकता नहीं होती।

स्वयं तक लौटने की यात्रा

शायद हमारे समय की सबसे बड़ी चुनौती यही है कि हम दुनिया की आवाज़ों के बीच अपनी आवाज़ पहचान सकें। हम यह समझ सकें कि हमें हर चीज़ बनने की जरूरत नहीं है। हमें केवल इतना करना है कि हम अपने जीवन के प्रति ईमानदार रहें। अपनी गति से चलें, अपने सपनों को समय दें और अपनी कमियों के साथ भी स्वयं को स्वीकार करना सीखें। क्योंकि अंततः जीवन का सबसे बड़ा पुरस्कार यह नहीं है कि दुनिया हमें कितना पहचानती है। सबसे बड़ा पुरस्कार यह है कि एक दिन आईने में देखकर हम कह सकें–

"मैंने अपनी जिंदगी किसी और की तरह बनने में नहीं, बल्कि खुद बनने में बिताई है।"

सब कुछ बनने की चाह सुनने में आकर्षक लगती है, लेकिन कई बार यही चाह हमें स्वयं से दूर कर देती है। जीवन की सच्ची खुशी हर दरवाज़ा खोलने में नहीं, बल्कि किसी एक रास्ते पर विश्वास के साथ चलने में है। दुनिया आपको लाखों संभावनाएँ दिखाएगी, लेकिन आपका सबसे महत्वपूर्ण काम उन सबके बीच अपने वास्तविक स्वरूप को बचाए रखना है।

क्योंकि अंत में, दुनिया को आपकी किसी और जैसी प्रतिलिपि नहीं चाहिए। उसे केवल एक व्यक्ति चाहिए– आप।

हरीश कुमार
कार्यपालक सचिव

सीआरएम



1. सीआरएम क्या हैं?

एक प्रमाणित संदर्भ सामग्री (Certified Reference Material & CRM) एक मानक नमूना होता है, जिसकी संरचना (Composition) का सटीक निर्धारण एवं प्रमाणीकरण किया गया होता है, तथा जिसका उपयोग मापन एवं परीक्षणों की शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है।

इसके गुण (जैसे शुद्धता, संरचना, सांद्रता आदि) पूर्व से ज्ञात एवं प्रमाणित होते हैं।



प्रयोगशालाएँ इसका उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों हेतु करती हैं:

- उपकरणों का अंशांकन (Calibration)
- परीक्षण विधियों का प्रमाणीकरण (Validation)
- परिणामों की शुद्धता की जाँच

2. Gold CRM क्या हैं और किसने बनाया?

स्वर्ण CRM का उपयोग स्वर्ण बार, सिक्कों एवं आभूषणों के परीक्षण हेतु एक संदर्भ के रूप में किया जाता है, जिससे स्वर्ण की वास्तविक शुद्धता का निर्धारण किया जा सके तथा अंर्तराष्ट्रीय मानकों (SI) के अनुरूप मापन अनुरेखणीयता (Metrological Traceability) सुनिश्चित हो सके।

भारत सरकार टकसाल, मुंबई द्वारा ''भारतीय निर्देशक द्रव्य'' (Bhartiya Nirdeshak Dravya - BND-4201) नामक भारतीय संदर्भ सामग्री का विकास किया गया है, जो 999.9 PPT शुद्धता का स्वदेशी एवं अपने प्रकार का प्रथम स्वर्ण प्रमाणित संदर्भ सामग्री (CRM) है। BND–4201 "Make in India" कार्यक्रम का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसे BARC & NCCCM, Hyderabad तथा CSIR-National Physical Laboratory, New Delhi के सहयोग से विकसित किया गया।

3. मान्यता प्राप्त

वर्तमान में, भारत सरकार टकसाल, मुंबई द्वारा ISO 17034:2016 मानक के अनुसार स्वतंत्र रूप से "Gold Certified Reference Material" का उत्पादन किया जा रहा है।

National Accreditation Board for Testing And Calibration Laboratories ने India Government Mint, Mumbai को ISO 17034:2016 (Reference Material Producer) के अंतर्गत 999.9 PPT शुद्धता के स्वर्ण प्रमाणित संदर्भ सामग्री (CRM) के निर्माण हेतु मान्यता (Accreditation) प्रदान की है।

भारत सरकार द्वारा दिनांक 03.03.2023 की राजपत्र अधिसूचना के माध्यम से 01 अप्रैल, 2023 से आभूषणों एवं कलाकृतियों का हॉलमार्किंग अनिवार्य किया गया है। हॉलमार्किंग केंद्रों पर आभूषणों पर हॉलमार्क यूनिक आइडेंटिफिकेशन

(HUID) अंकित करने से पूर्व, IS 1417:2023 के अनुसार स्वर्ण की शुद्धता का परीक्षण

किया जाता है। वर्तमान में, भारत सरकार टकसाल, मुंबई द्वारा ISO 17034:2016 मानक के अनुसार स्वतंत्र रूप से "Gold Certified Reference Material" का उत्पादन किया जा रहा है।

4. IS में इसका उल्लेख।

यह उल्लेखनीय है कि मानक IS 15820:2024 में असेइंग एवं हॉलमार्किंग केंद्रों की स्थापना एवं संचालन का प्रावधान है तथा इसके खंड 6.5.2 (इ) में यह निर्दिष्ट है कि:

'प्रमाणित संदर्भ सामग्री के प्रमाणित मान सक्षम उत्पादक द्वारा प्रदान किए गए, जो IS 17034 से मान्यता प्राप्त संदर्भ सामग्री उत्पादक हो अथवा IS 17025 से मान्यता प्राप्त केंद्र (मान्यता प्राप्त कार्यक्षेत्र सहित)/भारतीय निर्देशक द्रव्य (BND)।

इसके अतिरिक्त, IS 15820:2024 के खंड 7.8.1 में परीक्षण परिणामों की वैधता सुनिश्चित करने हेतु संदर्भ सामग्रियों के उपयोग का प्रावधान किया गया है।

अतः स्वर्ण असेइंग एवं हॉलमार्किंग केंद्रों तथा भारतीय मानक ब्यूरो से लाइसेंस प्राप्त स्वर्ण रिफाइनरियों के लिए IS 15820:2024 एवं IS 1418:2009 के अनुसार अंर्तराष्ट्रीय मापन मानकों (SI) से अनुरेखणीय प्रमाणित स्वर्ण मानकों का उपयोग अनिवार्य है। इससे स्वर्ण शुद्धता परीक्षण की सटीकता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित होती है, जन–विश्वास सुदृढ़ होता है तथा अनिवार्य हॉलमार्किंग हेतु अपेक्षित गुणवत्ता मानकों का पालन सुनिश्चित होता है।

5. निष्कर्ष

भारत सरकार टकसाल, मुंबई भारत में एकमात्र संस्था है जिसे ISO 17034:2016 के अंतर्गत 999.9 शुद्धता के स्वर्ण संदर्भ सामग्री (CRM) के उत्पादन हेतु प्रमाणित किया गया है। यह एक सरकारी संस्था है, जो वर्ष 2017 से इन स्वर्ण CRMs का उत्पादन कर रही है तथा देश के सभी स्वर्ण असेइंग एवं हॉलमार्कगि केंद्रों एवं रिफाइनरियों को इसकी आपूर्ति करने में सक्षम है।

यह भी अवगत कराया जाता है कि उपर्युक्त जानकारी दिनांक 15.12.2023 को Press Information Bureau की वेबसाइट पर भी प्रकाशित की गई थी।

(https://www.pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1986584&reg=3&lang=2)

मयंक अग्रवाल
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (अनुसंधान एवं विकास)

सूचना से समाधान तक : जागरूक नागरिक की सहभागिता



लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति केवल संसद, विधानसभाओं अथवा प्रशासनिक संस्थाओं में ही नहीं, बल्कि जागरूक और सक्रिय नागरिकों में भी निहित होती है। जब नागरिक अपने अधिकारों और दायित्वों के प्रति सजग होते हैं, तब शासन अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और जनोन्मुखी बनता है। सूचना का अधिकार अधिनियम तथा लोक शिकायत निवारण व्यवस्था इसी लोकतांत्रिक सोच के सशक्त उदाहरण हैं, जिन्होंने नागरिकों और प्रशासन के मध्य संवाद को नई दिशा प्रदान की है।

आज के डिजिटल युग में नागरिकों की अपेक्षाएँ केवल सेवाएँ प्राप्त करने तक सीमित नहीं हैं। वे यह भी जानना चाहते हैं कि निर्णय कैसे लिए जाते हैं, योजनाओं का क्रियान्वयन किस प्रकार हो रहा है और उनकी समस्याओं का समाधान किस स्तर पर पहुँच चुका है। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए सूचना प्राप्त करने तथा शिकायतों के निवारण की प्रभावी व्यवस्थाएँ विकसित की गई हैं।

सूचना का अधिकार : पारदर्शिता की आधारशिला

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 भारतीय लोकतंत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जाता है। इस अधिनियम के माध्यम से प्रत्येक भारतीय नागरिक को सार्वजनिक प्राधिकरणों के पास उपलब्ध सूचनाएँ प्राप्त करने का वैधानिक अधिकार प्राप्त हुआ है।

इस व्यवस्था के अंतर्गत नागरिक विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, सार्वजनिक उपक्रमों तथा अन्य सार्वजनिक संस्थाओं से अभिलेखों, आदेशों, नियमों, परिपत्रों, रिपोर्टों तथा अन्य उपलब्ध दस्तावेजों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इस अधिकार ने प्रशासनिक कार्यप्रणाली में खुलापन बढ़ाने तथा नागरिकों की भागीदारी को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

केंद्रीय मंत्रालयों एवं विभागों से संबंधित आवेदन निम्नलिखित पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन प्रस्तुत किए जा सकते हैं:

https://rtionline.gov.in / CPGRAM Portal

सामान्यतः लोक सूचना अधिकारी द्वारा 30 दिनों के भीतर सूचना उपलब्ध कराई जाती है। यदि निर्धारित समय में सूचना प्राप्त न हो अथवा प्राप्त उत्तर संतोषजनक न हो, तो प्रथम एवं द्वितीय अपील का प्रावधान भी उपलब्ध है।

यह समझना आवश्यक है कि सूचना का अधिकार अधिनियम उपलब्ध अभिलेखों और दस्तावेजों में निहित सूचना प्राप्त करने का माध्यम है। इसके तहत किसी अधिकारी से व्यक्तिगत राय, स्पष्टीकरण अथवा काल्पनिक प्रश्नों के उत्तर नहीं माँगे जा सकते। साथ ही, अधिनियम की धारा 8(1) में राष्ट्रीय सुरक्षा, वाणिज्यिक गोपनीयता, न्यायिक गोपनीयता तथा व्यक्तिगत निजता से संबंधित कुछ सूचनाओं को प्रकटीकरण से छूट प्रदान की गई है। इसलिए नागरिकों को सदैव स्पष्ट, संक्षिप्त और तथ्याधारित सूचना का अनुरोध करना चाहिए, जिससे सूचना प्राप्ति की प्रक्रिया अधिक प्रभावी और सार्थक बन सके।

शिकायत से समाधान तक

कई बार नागरिकों को किसी सूचना की अपेक्षा नहीं होती, बल्कि वे अपनी किसी समस्या के समाधान की अपेक्षा रखते हैं। ऐसे मामलों में सूचना का अधिकार उपयुक्त माध्यम नहीं होता। इसके लिए लोक शिकायत निवारण व्यवस्था अधिक प्रभावी सिद्ध होती है।

भारत सरकार द्वारा विकसित केंद्रीकृत लोक शिकायत निवारण एवं निगरानी प्रणाली नागरिकों को विभिन्न मंत्रालयों, विभागों तथा सरकारी संगठनों से संबंधित शिकायतें दर्ज कराने की सुविधा प्रदान करती है। यह व्यवस्था शिकायतों के समयबद्ध निस्तारण तथा उनकी निगरानी के लिए एक प्रभावी मंच के रूप में विकसित हुई है। लोक शिकायतों के पंजीकरण हेतु निम्नलिखित पोर्टल उपलब्ध हैः–

https://pgportal.gov.in

इस प्रणाली के माध्यम से नागरिक सेवा संबंधी समस्याओं, आवेदन या प्रकरणों के लंबित रहने, भुगतान में विलंब, पेंशन संबंधी कठिनाइयों तथा अन्य प्रशासनिक शिकायतों को दर्ज करा सकते हैं। शिकायत दर्ज होने के पश्चात उसकी प्रगति का अवलोकन भी ऑनलाइन किया जा सकता है, जिससे प्रक्रिया अधिक पारदर्शी और उत्तरदायी बनती है।

सही माध्यम का चयन क्यों आवश्यक है?

नागरिक शिकायतों के समाधान के लिए सूचना का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत आवेदन प्रस्तुत कर देते हैं, जबकि ऐसे मामलों में लोक शिकायत निवारण प्रणाली अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकती है। इसी प्रकार, जहाँ किसी दस्तावेज, आदेश, पत्राचार अथवा अभिलेख की प्रति अपेक्षित हो, वहाँ सूचना का अधिकार उपयुक्त माध्यम है।

लोक शिकायत निवारण प्रणाली का उद्देश्य प्रशासनिक सेवाओं से संबंधित शिकायतों एवं कठिनाइयों के समाधान हेतु एक सुलभ मंच उपलब्ध कराना है। तथापि, कुछ विषय ऐसे हैं जो सामान्यतः लोक शिकायत पोर्टल के दायरे में नहीं आते, जैसे–

- न्यायालयों, अधिकरणों अथवा अन्य न्यायिक मंचों में विचाराधीन मामले तथा न्यायिक निर्णयों से संबंधित विषय।
- सूचना का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत सूचना प्राप्त करने, स्पष्टीकरण माँगने अथवा अपील से संबंधित मामले।
- व्यक्तिगत अथवा निजी विवाद, जैसे पारिवारिक, संपत्ति या पड़ोसी संबंधी विवाद।
- ऐसे सेवा–संबंधी मामले जिनके निवारण हेतु पृथक वैधानिक अपील, पुनरीक्षण अथवा अन्य निर्धारित मंच उपलब्ध हों।
- नीतिगत सुझाव, नई नीतियों की माँग अथवा ऐसे विषय जो किसी अन्य संवैधानिक, वैधानिक या नियामक प्राधिकरण के अधिकार क्षेत्र में आते हों।

अतः यदि उद्देश्य किसी अभिलेख, आदेश, रिपोर्ट अथवा दस्तावेज की प्रति प्राप्त करना है, तो सूचना का अधिकार अधिनियम उपयुक्त माध्यम है; वहीं किसी सेवा में विलंब, प्रशासनिक कठिनाई अथवा सार्वजनिक सेवा से संबंधित समस्या के समाधान के लिए लोक शिकायत निवारण व्यवस्था अधिक प्रभावी मंच है। सही माध्यम का चयन न केवल समय और संसाधनों की बचत करता है, बल्कि अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने में भी सहायता करता है।

जागरूक नागरिक, उत्तरदायी प्रशासन

लोकतंत्र में अधिकार और दायित्व एक–दूसरे के पूरक हैं। सूचना प्राप्त करने का अधिकार तथा शिकायतों के समाधान की व्यवस्था तभी सार्थक बनती है जब उनका उपयोग जिम्मेदारी, संयम और तथ्यों के आधार पर किया जाए। इन व्यवस्थाओं का उद्देश्य केवल प्रक्रियाएँ उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि नागरिकों और प्रशासन के बीच विश्वास को सुदृढ़ करना भी है।

आज जब शासन की अनेक सेवाएँ डिजिटल माध्यमों से नागरिकों तक पहुँच रही हैं, तब सूचना प्राप्त करने और शिकायतों के निवारण की ये व्यवस्थाएँ लोकतंत्र को और अधिक सहभागी तथा उत्तरदायी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। एक जागरूक नागरिक, एक उत्तरदायी प्रशासन और दोनों के बीच सत्त संवाद ही सुशासन की वास्तविक पहचान है।

सूचना से जागरूकता और समाधान से संतुष्टि यही सशक्त लोकतंत्र की आधारशिला है।

कुशल सिंह वर्मा
वरिष्ठ कार्यालय सहायक (मा.सं.)

जल स्थिरता



जल जीवन का आधार है और पृथ्वी पर मौजूद सबसे अनमोल संसाधनों में से एक है। जल स्थिरता का अर्थ केवल पानी बचाना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियाँ स्वच्छ, पर्याप्त और सुलभ पानी प्राप्त कर सकें। जल संसाधनों का संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण, और न्यायसंगत वितरण ये तीनों पहलू सतत जल प्रबंधन के मूल तत्व हैं।

जल की महत्ता और वर्तमान स्थिति

पानी न केवल पीने के लिए आवश्यक है, बल्कि कृषि, उद्योग, ऊर्जा उत्पादन और पारिस्थितिक तंत्र के संतुलन के लिए भी अनिवार्य है। वैश्विक स्तर पर मीठे पानी के स्रोत सीमित हैं और कई क्षेत्रों में भूजल स्तर घट रहा है। शहरीकरण, औद्योगीकरण और बढ़ती जनसंख्या ने जल की मांग को बढ़ा दिया है, जबकि जलवायु परिवर्तन वर्षा के पैटर्न बदलकर सूखे और बाढ़ जैसी चरम घटनाओं की आवृत्ति बढ़ा रहा है। इन सबका परिणाम यह है कि कई समुदायों को पानी की कमी, जल–गुणवत्ता में गिरावट और असमान वितरण का सामना करना पड़ रहा है।

प्रमुख चुनौतियाँ

प्रदूषण: औद्योगिक अपशिष्ट, कृषि रसायन और घरेलू सीवेज नदियों और झीलों को प्रदूषित कर रहे हैं, जिससे पीने योग्य पानी की उपलब्धता घटती है।

अति–निकासी: भूजल का अनियंत्रित दोहन कई क्षेत्रों में जल तालिका को नीचे धकेल रहा है, जिससे कुओं और नलकूपों का सूखना आम बात हो गई है।

असमान वितरण: कुछ क्षेत्रों में पानी की प्रचुरता है जबकि अन्य सूखे का सामना कर रहे हैं; यह असमानता सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को और बढ़ाती है।

जलवायु परिवर्तन: बदलते मौसम के कारण वर्षा अनिश्चित हो रही है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं और बाढ़ व सूखा अधिक चरम रूप ले रहे हैं।

समाधान और रणनीतियाँ

कुशल उपयोग: कृषि में ड्रिप सिंचाई, सूक्ष्म सिंचाई और मौसम–आधारित सिंचाई योजनाओं को अपनाकर पानी की खपत कम की जा सकती है।

वर्षा जल संचयन: छतों और सार्वजनिक स्थानों पर वर्षा जल संचयन संरचनाएँ बनाकर स्थानीय जल भंडार बढ़ाए जा सकते हैं।

अपशिष्ट जल पुनर्चक्रण: शहरी क्षेत्रों में ट्रीटमेंट प्लांट और पुनः उपयोग प्रणालियाँ स्थापित कर उद्योगों और हरित क्षेत्रों के लिए पुनर्चक्रित पानी उपलब्ध कराया जा सकता है।

प्रौद्योगिकी और नवाचार: स्मार्ट मीटरिंग, रिसाव पहचान तकनीक और जल–प्रबंधन सॉफ्टवेयर से वितरण प्रणाली की दक्षता बढ़ाई जा सकती है।

नीतिगत सुधार: जल मूल्य निर्धारण, जल अधिकारों का न्यायसंगत आवंटन और प्रदूषण नियंत्रण के कड़े नियम आवश्यक हैं।

व्यक्तिगत और सामुदायिक कदम

व्यक्ति स्तर पर छोटे–छोटे कदम भी बड़ा प्रभाव डालते हैं: नल बंद रखना, कम पानी में कपड़े धोना, बागवानी में ड्रिप सिस्टम का उपयोग और घरेलू रिसाव तुरंत ठीक कराना। समुदाय स्तर पर जागरूकता अभियान, स्कूलों में जल शिक्षा और स्थानीय जल समितियों का गठन प्रभावी साबित होता है। सामुदायिक तालाबों, छोटे बाँधों और स्थानीय जल भंडारों की मरम्मत व संरक्षण से स्थानीय जल सुरक्षा बढ़ती है।

नीति, न्याय और भविष्य की दिशा

जल स्थिरता केवल तकनीकी समाधान नहीं है; यह सामाजिक न्याय का मुद्दा भी है। कमजोर और पिछड़े समुदायों को पानी की पहुँच सुनिश्चित करना नीतिगत प्राथमिकता होनी चाहिए। सरकारों, नागरिक समाज और निजी क्षेत्र को मिलकर दीर्घकालिक जल प्रबंधन योजनाएँ बनानी चाहिए जो पारिस्थितिक संरक्षण, आर्थिक विकास और सामाजिक समावेशन को संतुलित करें। जल–शिक्षा और अनुसंधान में निवेश से बेहतर नीतियाँ और नवाचार उभरेंगे।

निष्कर्ष

जल स्थिरता का लक्ष्य है–सुरक्षित, पर्याप्त और न्यायसंगत पानी हर किसी के लिए। यह लक्ष्य तभी हासिल होगा जब हम व्यक्तिगत स्तर पर जिम्मेदारी निभाएँ, समुदायों में सहयोग बढ़ाएँ और नीतिगत रूप से दीर्घकालिक, समावेशी और पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील निर्णय लें। पानी की रक्षा करना आज की आवश्यकता है और आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी भी।

प्रशांत विष्ट
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (आर.एम.)

पुरुषोत्तम



वो तेज़ का रूप है,
अलौकिक सा जीव है
उसकी तीव्र चाल है,
व्यक्तित्व ही उसकी ढाल है

नर्म है, हृदय उसका, दया की मिसाल है
मस्तिष्क पे शिकन बांधे, वो इंसानियत की ढाल है

लो, चला अकेले वो,
रीढ़ ताने,
संभलता संभलता,
सच्चाई से आगे बढ़ता
कठिन पथ पर है डटा हुआ खड़ा,
आदर्शों पर अपने वो बिना हीले अड़ा

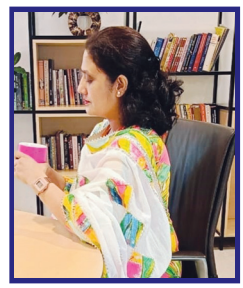
सूर्य सा सम्पन्न,
चंद्रमा सा शांत
मनुष्यो में महान
वो शिव के समान

पुरुषार्थ की प्रतिच्छाया
सदैव झलकती,
कर्म पर विश्वास कर
वो कदम दर कदम बढ़ता

वो नर्म दिल का इंसान
नहीं कोई सामान
प्रतिबिंब ही बतलाए,
है कितना महान

व्योम त्रिपाठी शिवम
प्रबंधक (विधि)

कॉफी : सिर्फ एक पेय नहीं



कॉफी मेरे लिए स्वाद से कहीं बढ़कर है। यह आत्मीयता है, आत्मसंवाद है, और जीवन की छोटी–छोटी खुशियों का उत्सव है। हर कप के साथ मैं खुद से फिर एक बार मिलती हूँ–थोड़ी शांत, थोड़ी मजबूत और थोड़ी अधिक मुस्कुराती हुई।

हर व्यक्ति की कोई–न–कोई पसंदीदा जगह होती है। किसी के लिए पहाड़, किसी के लिए समुद्र और किसी के लिए किताबों से भरा रूम। मेरी पसंदीदा जगह कोई स्थान नहीं, बल्कि वह क्षण है जब हाथ में कॉफी का कप होता है और सामने कुछ पल की खामोशी। वही कुछ मिनट पूरे दिन का सबसे सच्चा संवाद बन जाते हैं।

कॉफी हमें याद दिलाती है कि खुशियाँ हमेशा बड़ी नहीं होतीं। कभी–कभी वे एक साधारण–से कप में भी मिल जाती हैं–जहाँ खुशबू होती है, सुकून होता है और अपने आप से मिलने का एक शांत अवसर भी। दौड़ती दुनिया के बीच थोड़ा–सा ठहरना, मुस्कुराना शायद यही एक साधारण–से कॉफी के कप का सबसे बड़ा जादू है।

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी सीमित मात्रा में कॉफी का सेवन लाभदायक माना जाता है। इसमें मौजूद कैफीन शरीर को स्फूर्ति देता है, एकाग्रता बढ़ाने में मदद करता है और थकान कम महसूस कराता है। हालांकि, अत्यधिक मात्रा में कॉफी पीने से अनिद्रा, बेचैनी और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं। इसलिए संतुलित सेवन ही सबसे उचित है।

कॉफी का असली आकर्षण केवल उसके स्वाद में नहीं, बल्कि उन पलों में छिपा है जिन्हें वह यादगार बना देती है। कभी किसी पुराने मित्र से मुलाकात, कभी किसी नई शुरुआत का उत्साह तो कभी अकेले बैठकर स्वयं से संवाद–इन सबका मौन साथी अक्सर एक कप कॉफी ही होता है।

कॉफी अक्सर समय को "धीमा" करने का काम करती है। सुबह की सिप हो या शाम को काम के बीच लिया गया ब्रेक–कॉफी एक ऐसा बहाना बनती है जिसमें हम कुछ पल अपने लिए निकाल लेते हैं।

यह केवल कैफीन का असर नहीं है, बल्कि एक मनोवैज्ञानिक अनुभव भी है:

- रुकने का अवसर
- सोचने का समय
- और खुद से जुड़ने की जगह



कॉफी का स्वाद सिर्फ कप में नहीं होता, बल्कि उसके आसपास के माहौल (Ambience) में भी होता है।

इसी वजह से एक ही कॉफी:

- घर पर अलग लगती है
- ऑफिस में अलग
- और कैफे में अलग

कॉफी से कहानियां भी जुड़ी होती है। किसी के लिए यह पहली मुलाकात की याद है, किसी के लिए विदाई की अंतिम शाम। कहीं यह सफलता का जश्न है, तो कहीं असफलता के बाद स्वयं को संभालने का एक शांत प्रयास। कॉफी इन सभी भावनाओं की मौन साक्षी बन जाती है।

कॉफी और रिश्ते

कॉफी अक्सर रिश्तों को जोड़ने का माध्यम भी बनती है। "चलो कॉफी पीते हैं" एक सरल वाक्य है, लेकिन इसके पीछे कई संभावनाएँ छिपी होती हैं–दोस्ती, बातचीत, समझ और कभी–कभी नए रिश्तों की शुरुआत।

यह एक ऐसा बहाना है जोः

- अजनबियों को करीब लाता है
- पुराने रिश्तों को ताजा करता है
- और बातचीत को सहज बनाता है

आज की तेज रफ्तार दुनिया में, जहाँ बातचीत अक्सर मोबाइल स्क्रीन तक सिमट जाती है, एक कप कॉफी हमें ठहरकर सामने बैठे व्यक्ति को सुनने और समझने का अवसर देती है। यही छोटे–छोटे पल रिश्तों को गहराई देते हैं और यादों को स्थायी बना देते हैं।

कॉफी केवल एक पेय नहीं है, यह एक अनुभव है जो स्वाद से आगे जाकर जीवनशैली, बातचीत और भावनाओं का हिस्सा बन जाता है। हर कप कॉफी हमें यह याद दिलाता है कि कभी–कभी रुकना, महसूस करना और बात करना भी उतना ही जरूरी है जितना आगे बढ़ते रहना।

कॉफी का सबसे खूबसूरत जादू यह है कि वह समय को थोड़ा धीमा कर देती है।

एक सिप लेते ही जैसे सब कुछ ठहर जाता है–घड़ी की टिक–टिक, स्क्रीन की भागदौड़, और मन की जल्दबाजी।

उस पल में बस इतना होता हैः

- कप की गर्माहट, हल्की सुगंध और अपने ही विचारों की धीमी आवाज

कॉफी टकराव नहीं, बातचीत को आसान बनाती है। यह चुप्पी को भी जगह देती है और शब्दों को भी।

हर कप का अपना मूड–

कॉफी एक जैसी होकर भी हर बार अलग होती है। कभी वह मीठी होती है, कभी कड़वी, कभी लाइट, कभी स्ट्रांग।

लेकिन असल फर्क कप में नहीं, पल में होता हैः

- अकेले बैठकर पी गई कॉफी अलग कहानी कहती है
- दोस्तों के साथ हँसते हुए पी गई कॉफी अलग
- और किसी सोच में डूबकर पी गई कॉफी बिल्कुल अलग

कॉफी हमें यह सिखाती है कि जीवन में हर चीज बड़ी नहीं होती, लेकिन महसूस करने लायक जरूर हो सकती है। कभी–कभी एक छोटा–सा कप भी पूरे दिन को थोड़ा बेहतर बना देता है।

दिलचस्प बात यह है कि जीवन की सबसे यादगार कहानियाँ हमेशा पूरी नहीं होतीं। कुछ अधूरी मुलाकातें, कुछ अधूरे वादे, कुछ अनकहे शब्द और कुछ अनलिखे पत्र–ये सब स्मृतियों में उसी तरह महकते रहते हैं, जैसे खाली हो चुके कप में देर तक बनी रहने वाली कॉफी की सुगंध। शायद अधूरापन ही उन्हें इतना सुंदर और यादगार बना देता है।

आखिरकार, कॉफी सिर्फ स्वाद नहीं, एक एहसास है। बातचीत सिर्फ शब्द नहीं, रिश्तों की धड़कन है। और अधूरी कहानियाँ... शायद इसलिए अधूरी रहती हैं ताकि वे हमेशा हमारे भीतर जीवित रह सकें।

रश्मि कौशिक
पर्यवेक्षक (आर.एम.)

वंदे मातरम्

भारत का राष्ट्रगीत – 150 वर्ष (1875–2025)





बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

वर्ष 2025–26 भारत के लिए विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इस दौरान राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' ने अपनी रचना के 150 वर्ष पूर्ण किए हैं। केंद्र सरकार ने इस अवसर पर 1 अक्टूबर 2025 को वर्ष भर चलने वाले राष्ट्रव्यापी समारोहों को मंजूरी दी, जिसका औपचारिक शुभारंभ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 7 नवंबर 2025 को दिल्ली के इंदिरा गांधी स्टेडियम में किया। इस अवसर पर एक स्मारक डाक टिकट और सिक्का भी जारी किया गया।

वंदे मातरम् की रचना 7 नवंबर 1875 को अक्षय नवमी के शुभ दिन हुई थी। इसे सर्वप्रथम बंगाली साहित्यिक पत्रिका 'बंगदर्शन' में प्रकाशित किया गया। उस समय भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों का दौर चल रहा था और राष्ट्रीय चेतना धीरे–धीरे जागृत हो रही थी। बाद में सन् 1882 में इसे बंकिम चंद्र के प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंदमठ' में सम्मिलित किया गया, जिसमें संन्यासी विद्रोह की पृष्ठभूमि में मातृभूमि की उपासना को केंद्रीय भाव के रूप में दर्शाया गया है।

वर्ष 1896 में कोलकाता कांग्रेस अधिवेशन में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने इसे पहली बार सार्वजनिक रूप से स्वरबद्ध कर गाया, जिसके बाद यह गीत जन–जन तक पहुँचा।

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय (चटर्जी) उन्नीसवीं सदी के बांग्ला साहित्य के अग्रणी उपन्यासकार, कवि और पत्रकार थे। वे बंगाल सरकार में एक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में कार्यरत रहे और साथ ही बांग्ला उपन्यास साहित्य को नई ऊँचाई देने वाले लेखक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। उनके उपन्यास 'आनंदमठ' ने राष्ट्रीय चेतना और मातृभूमि के प्रति समर्पण के भाव को साहित्यिक रूप से अभिव्यक्त किया, जिसका केन्द्रीय गीत वंदे मातरम् आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम का मूल स्वर बन गया।

वंदे मातरम् शीघ्र ही भारत की स्वाधीनता की लड़ाई की मूल पहचान बन गया। प्रधानमंत्री कार्यालय द्वारा जारी विवरण के अनुसार, स्वतंत्रता संग्राम का शायद ही कोई ऐसा अध्याय हो जिसमें वंदे मातरम् किसी न किसी रूप में उपस्थित न रहा हो।

वर्ष 1905 में जब ब्रिटिश शासन ने बंगाल का विभाजन किया, तब इस विभाजन के विरुद्ध हुए जन–आंदोलन में वंदे मातरम् एक चट्टान की तरह खड़ा रहा। बारिसल अधिवेशन में जब प्रदर्शनकारियों पर गोलियाँ चलाई गईं, तब भी उनके होठों पर वंदे मातरम् का उद्घोष था।

क्रांतिकारी विचारधारा से जुड़े अनेक स्वतंत्रता सेनानी, जैसे विनायक दामोदर सावरकर, विदेश में रहते हुए भी एक–दूसरे का अभिवादन 'वंदे मातरम्' कहकर करते थे। बिपिन चंद्र पाल के संपादन में और बाद में श्री अरबिंदो घोष के सह–संपादन में प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक 'बंदे मातरम्' ने राष्ट्रवाद, आत्मनिर्भरता और एकता के विचारों को अखिल भारतीय स्तर पर फैलाने का कार्य किया। इस समाचार–पत्र के प्रभाव से चिंतित होकर तत्कालीन ब्रिटिश प्रशासन ने इसके प्रसार को रोकने के लिए कठोर कदम उठाए।

मैडम भीकाजी कामा द्वारा 1907 में जर्मनी के स्टुटगार्ट में फहराए गए भारत के प्रारंभिक ध्वजों में से एक पर भी 'वंदे मातरम् अंकित था, जो इस गीत के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय पहचान के प्रतीक बनने का प्रमाण है।

स्वतंत्रता के पश्चात 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने घोषणा की कि वंदे मातरम्,

जिसने स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है, उसे राष्ट्रगान 'जन गण मन' के समान ही सम्मान दिया जाएगा। इसी घोषणा के आधार पर वंदे मातरम् को भारत के 'राष्ट्रगीत' की मान्यता प्राप्त है, जबकि 'जन गण मन' भारत का 'राष्ट्रगान' है।

वंदे मातरम् में मातृभूमि को शक्ति, समृद्धि और दिव्यता से संपन्न एक माँ के रूप में चित्रित किया गया है – भारत की भूमि, जल, फल, वायु और शस्य–श्यामला धरती की स्तुति के माध्यम से यह गीत राष्ट्र के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता और अपनत्व का भाव जगाता है। इसी कारण गृह मंत्रालय द्वारा जारी विवरण में इसे केवल एक गीत न कहकर ष्भारत की सामूहिक चेतनाष और स्वतंत्रता सेनानियों की 'रैलिंग–क्राई' (संघर्ष का उद्घोष) बताया गया है।

वर्तमान शासकीय नियम एवं एसओपी (Standard Operating Procedure)

150वें वर्ष के अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने वंदे मातरम् के गायन एवं वादन से संबंधित विस्तृत और औपचारिक दिशा–निर्देश जारी किए हैं, जिनके प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं:

- 28 जनवरी को जारी 10 पृष्ठों के आदेश में गृह मंत्रालय ने बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित गीत का 'आधिकारिक संस्करण' अधिसूचित किया, जिसमें छह अंतरों वाला पूर्ण संस्करण सम्मिलित है।
- इस आधिकारिक संस्करण की अवधि 3 मिनट 10 सेकंड निर्धारित की गई है।
- राष्ट्रीय ध्वजारोहण, परेड, समारोहिक कार्यक्रमों तथा राष्ट्रपति के किसी भी शासकीय अथवा सार्वजनिक कार्यक्रम में आगमन एवं प्रस्थान के अवसर पर यह आधिकारिक संस्करण बजाया जाना निर्धारित है।
- यदि किसी कार्यक्रम में राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' तथा राष्ट्रगान 'जन गण मन' दोनों प्रस्तुत किए जाते हैं, तो वंदे मातरम् को पहले बजाए जाने का निर्देश है।
- गायन अथवा वादन के दौरान उपस्थित जनसमूह को सावधान की मुद्रा (स्टैंड एट अटेंशन) में खड़ा रहना निर्देशित किया गया है।
- दोनों राष्ट्रीय प्रतीकों – राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान – के मूल शब्दों, सही उच्चारण एवं निर्धारित धुन का अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु इनका अधिकृत पाठ मंत्रालय की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध कराया गया है।

अपनी रचना के 150 वर्ष पूर्ण होने पर वंदे मातरम् भारत के इतिहास, संस्कृति और राष्ट्र–निर्माण की एक जीवंत धरोहर के रूप में सामने आता है। यह गीत जहाँ एक ओर स्वतंत्रता संग्राम के त्याग और बलिदान की स्मृति को सजीव रखता है, वहीं दूसरी ओर वर्तमान भारत में राष्ट्रीय पहचान, सांस्कृतिक विविधता और धार्मिक बहुलवाद के मध्य संवाद की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है। शासकीय स्तर पर स्पष्ट एसओपी और सर्वोच्च न्यायालय के संतुलित रुख के साथ, वंदे मातरम् आज भी भारत की 'सामूहिक चेतना' के प्रतीक के रूप में अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है।



प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के 150 वर्ष के
स्मरणोत्सव के अवसर पर 07 नवम्बर, 2025 को जारी स्मारक सिक्का एवं डाक टिकट

(नरेश कुमार)
प्रबंधक (राजभाषा)

संघ की राजभाषा नीति के कार्यालय में अनुपालन हेतु 20 सूत्री कार्यक्रम

1. **धारा 3(3) का अनुपालनः** राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी 14 विनिर्दिष्ट दस्तावेज (जैसे सामान्य आदेश, परिपत्र, नियम, निविदाएं, अनुबंध, लाइसेंस, परमिट, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टें और संसद के समक्ष रखे जाने वाले दस्तावेज) अनिवार्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जाएं।

2. **हिन्दी में प्राप्त पत्रों का शत–प्रतिशत उत्तर हिन्दी में देना (नियम 5):** राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर केवल हिंदी में ही दिए जाएं।

3. **सक्रिय घोषणाएं (नियम 10(4) एवं 8(4)):** जिन कार्यालयों/इकाइयों में 80% या अधिक कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उन्हें तुरंत अधिसूचित कराया जाए। इसके तत्पश्चात नियम 8(4) के तहत विशिष्ट आदेश जारी किए जाएं।

4. **राष्ट्रपति के आदेशः** संसदीय राजभाषा समिति के विभिन्न खंडों पर राष्ट्रपति द्वारा समय–समय पर जारी आदेशों और सिफारिशों का कड़ाई से अनुपालन किया जाए। एक वर्ष से अधिक समय तक रिक्त पड़े हुए हिंदी के पदों को समाप्त नहीं किया जाए।

5. **राजभाषा नियम 11 के अंतर्गत द्विभाषी नामपट्ट, मुहर और स्टेशनरीः** सभी कार्यालयों, इकाइयों और अधिकारियों के नामपट्ट, साइनबोर्ड, रबर मुहर, लेटरहेड तथा विजिटिंग कार्ड हिंदी और अंग्रेजी दोनों में तैयार कराए जाएं, जिनमें हिंदी को ऊपर या बाईं ओर स्थान दिया जाए, जैसा कि गृह मंत्रालय के निर्देशों में अपेक्षित है।

6. **राजभाषा कार्यान्वयन हेतु नोडल/लाइजन अधिकारीः** प्रत्येक इकाई/कार्यालय के सभी विभागों में राजभाषा की प्रगति की समीक्षा के लिए एक वरिष्ठ अधिकारी को राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नोडल अधिकारी नामित किया जाए।

7. **प्रवेश स्तर पर अनिवार्य प्रशिक्षणः** गृह मंत्रालय की 'हिंदी शिक्षण योजना' के अंतर्गत गैर–हिंदी भाषी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्य समय के दौरान प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ पाठ्यक्रमों में अनिवार्य रूप से नामित करते हुए उन्हें कार्यसाधक अथवा प्रवीणता की श्रेणी में शामिल किया जाए।

8. **विभाग–विशिष्ट तकनीकी हिंदी कार्यशालाएं:** सामान्य या पारंपरिक कार्यशालाओं के स्थान पर विभिन्न विभागों की कार्य प्रकृति के अनुरूप कस्टमाइज्ड कार्यशालाएं आयोजित की जाएं – जैसे वित्त विभाग के लिए 'वित्तीय शब्दावली' और तकनीकी विभाग के लिए उससे जुड़ी 'तकनीकी शब्दावली' पर व्यावहारिक अभ्यास।

9. **वरिष्ठ प्रबंधन का उन्मुखीकरणः** निदेशक मंडल के सदस्यों तथा वरिष्ठ अधिकारियों के लिए राजभाषा नीति एवं प्रगति पर एक संक्षिप्त वार्षिक उन्मुखीकरण सत्र आयोजित किया जाए, ताकि नीतिगत निर्णयों में राजभाषा संबंधी दायित्वों की समझ बनी रहे।

10. **राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों को प्राथमिकताः** प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक अनिवार्य रूप से आयोजित की जाए, जिसकी अध्यक्षता स्वयं अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक या कार्यालय प्रमुख करें।

11. **राजभाषा निरीक्षणः** कार्यालय के आंतरिक अनुभागों एवं अधीनस्थ इकाइयों का वार्षिक "राजभाषा निरीक्षण" सुनिश्चित किया जाए, और माननीय संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण दौरों के लिए हर समय तैयार रहने हेतु आंतरिक मॉक–निरीक्षण की व्यवस्था बनाई रखी जाए।

12. **तिमाही प्रगति रिपोर्ट का समयबद्ध प्रस्तुतीकरणः** राजभाषा प्रगति के उचित आकलन एवं समीक्षा के लिए प्रत्येक कार्यालय को राजभाषा विभाग की वैबसाइट पर ऑनलाइन पंजीकृत कराना अनिवार्य है। प्रत्येक तिमाही की समाप्ति के एक माह के अंदर निर्धारित प्रपत्र में तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन पोर्टल पर अपलोड की जाए।

13. **नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) में सक्रिय सहभागिताः** नराकास की बैठकों में नियमित रूप से भाग लिया जाए और अन्य कार्यालयों के सफल प्रयासों से सीखा जाए।

14. **मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति में भागीदारीः** संबंधित मंत्रालय के अंतर्गत गठित हिंदी सलाहकार समिति (जिसकी अध्यक्षता मंत्री महोदय करते हैं) की बैठकों में उपक्रम के प्रतिनिधि की उपस्थिति सुनिश्चित की जाए, तथा समिति की सिफारिशों का अनुपालन कर उसकी रिपोर्ट अगली बैठक में प्रस्तुत की जाए।

15. **कार्यालय की मुख्य वेबसाइटः** प्रत्येक कार्यालय की वैबसाइट द्विभाषी सुनिश्चित की जाए। साथ ही ग्राहक सेवा पोर्टल और मोबाइल ऐप्स पूरी तरह द्विभाषी हों, और नई सामग्री जोड़े जाने पर हिंदी संस्करण अंग्रेजी के साथ ही अद्यतन किया जाए, न कि बाद में।

16. **राजभाषा प्रोत्साहन योजनाः** राजभाषा विभाग द्वारा समय–समय पर जारी राजभाषा प्रोत्साहन योजनाओं को यथासंभव और अधिक आकर्षक बनाकर हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने वाले कार्मिकों को प्रोत्साहित किया जाए।

17. **राजभाषा पत्रिका का प्रकाशनः** राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन सुनिश्चित किया जाए, जिसमें विभिन्न विषयों पर कार्मिकों के लेख आदि शामिल किए जाएं और इसे संगठन के विभिन्न सोशल मीडिया प्लैटफार्म आदि पर प्रदर्शित किया जाए।

18. **हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस का आयोजनः** प्रतिवर्ष सितंबर माह में हिंदी पखवाड़ा मनाया जाए, जिसमें विभिन्न रोचक प्रतियोगिताएं आयोजित कर विजेताओं को पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र दिए जाएं। समापन समारोह में वरिष्ठतम प्रबंधन की उपस्थिति सुनिश्चित की जाए।

19. **कार्यालय में हिंदी पुस्तकालयः** कार्मिकों के उपयोग हेतु कार्यालय परिसर में एक समृद्ध राजभाषा पुस्तकालय स्थापित किया जाए, और प्रतिवर्ष निर्धारित बजट का एक हिस्सा नई हिंदी पुस्तकों की खरीद पर व्यय किया जाए।

20. **राजभाषा सॉफ्टवेयर का प्रभावी उपयोगः** तकनीकी नियमावलियों, निविदा दस्तावेजों और वित्तीय फाइलों के त्वरित व सटीक अनुवाद के लिए भारत सरकार द्वारा स्वीकृत एआई टूल्स (जैसे 'भाषिणी' – Bhashini AI) को कंपनी के इंट्रानेट पर एकीकृत किया जाए।

छोटे कदम, बड़ा प्रभावः एक हरित भविष्य की ओर



''हमारे ग्रह के लिए सबसे बड़ा खतरा यह विश्वास है कि इसे बचाने का काम कोई और करेगा''

– रॉबर्ट स्वान

हम अक्सर यह मान लेते हैं कि पर्यावरण पर सार्थक प्रभाव डालने के लिए असाधारण संसाधनों या बड़े स्तर की पहलों की आवश्यकता होती है। लेकिन मेरी यात्रा ने मुझे सिखाया है कि स्थायी परिवर्तन की शुरुआत एक छोटे से कदम से होती है–जिसे निरंतरता के साथ उठाया जाए।

मैं अपने जीवन के एक ऐसे अनुभव को साझा करना चाहती हूँ जिसने न केवल मेरे जीवन को, बल्कि मेरे सोसाइटी के अनेक घरों की जीवनशैली को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित किया।

यह सब मार्च 2020 की एक सुबह, लॉकडाउन के दौरान शुरू हुआ। मोबाइल पर एक यूट्यूब वीडियो सामने आया जिसमें रसोई के जैविक कचरे से कम्पोस्ट बनाने की विधि बताई गई थी। उस वीडियो ने मुझे इतना प्रेरित किया कि मैंने उसी समय इसे स्वयं आजमाने का निश्चय कर लिया।

मैंने अपने पहले कम्पोस्टर के रूप में एक पुरानी टूटी हुई बाल्टी का उपयोग किया। साथ ही पुराने जार और मिट्टी के मटकों को गमलों और कम्पोस्टिंग कंटेनरों के रूप में पुनः उपयोग किया। जो शुरुआत में केवल एक छोटा–सा प्रयोग था, वह धीरे–धीरे मेरी जीवनशैली का अभिन्न हिस्सा बन गया।

मार्च 2020 से लेकर आज तक कम्पोस्टिंग हमारे घर की दैनिक दिनचर्या का हिस्सा है। हर वर्ष हमारे घर का कई हजार किलोग्राम रसोई का जैविक कचरा पोषक तत्वों से भरपूर कम्पोस्ट में बदल जाता है, जिसे अक्सर 'ब्लैक गोल्ड' कहा जाता है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि यह छोटा–सा प्रयास हजारों किलोग्राम जैविक कचरे को लैंडफिल तक पहुँचने से रोकता है, जहाँ वह अन्यथा प्रदूषण और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन का कारण बनता।



जो पहल एक व्यक्तिगत प्रयास के रूप में शुरू हुई थी, उसे जल्द ही व्यापक पहचान भी मिली। फरवरी 2021 में मुझे दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) के कमिश्नर द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में दिल्ली भर से चुने गए दस पर्यावरण संरक्षणकर्ताओं में से एक के रूप में सम्मानित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अगले ही दिन समाचार पत्रों में अपनी तस्वीर देखना तथा मित्रों, सहकर्मियों और परिवारजनों से शुभकामनाएँ प्राप्त करना मेरे जीवन के अविस्मरणीय क्षणों में से एक था। मुझे 'Buddy Composter' की उपाधि से भी सम्मानित किया गया और मेरी इस यात्रा को एमसीडी की वार्षिक पत्रिका में भी स्थान मिला। यद्यपि ये सम्मान मेरे लिए अत्यंत प्रेरणादायक रहे, लेकिन सबसे बड़ा पुरस्कार हमेशा यही रहा कि मेरे घर में किया गया एक छोटा–सा बदलाव पर्यावरण के लिए सकारात्मक योगदान दे रहा है।



जब गीले कचरे के प्रबंधन की समस्या का समाधान हो गया, तब मेरा ध्यान सूखे कचरे की बढ़ती चुनौती की ओर गया। केवल कचरे का पृथक्करण (सेग्रिगेशन) पर्याप्त नहीं था। मैं यह भी सुनिश्चित करना चाहती थी कि रिसाइकल योग्य कचरा वास्तव में रिसाइकल हो। कुछ शोध करने के बाद मैंने एक वेस्ट मैनेजमेंट कंपनी के साथ मिलकर अपनी आवासीय सोसाइटी में सूखे कचरे के सेग्रिगेशन और रिसाइकल का एक सामुदायिक कार्यक्रम शुरू किया।



इसकी प्रक्रिया सरल होने के साथ–साथ अत्यंत प्रभावी भी है। इसमें भाग लेने वाले परिवारों को सूखे कचरे के लिए बारकोड लगे बड़े बैग दिए जाते हैं। प्रत्येक सप्ताह कंपनी का वाहन इन बैगों को एकत्र करता है और यह सुनिश्चित करता है कि पूरा कचरा वैज्ञानिक एवं जिम्मेदारीपूर्वक रिसाइकल हो। उल्लेखनीय बात यह है कि टॉफी के रैपर, दवाइयों, चिप्स, दूध के पैकेट, पेन, कागज, टूटे खिलौने, सेल इत्यादि जैसे छोटे–छोटे कचरे भी घरों से एकत्र होकर रिसाइकल के लिए भेजे जाते हैं।



इस पहल की सबसे प्रेरणादायक विशेषता इसका पारदर्शी डिजिटल डैशबोर्ड है, जिसके माध्यम से प्रत्येक परिवार अपने पर्यावरणीय योगदान को देख सकता है। इस डैशबोर्ड पर यह जानकारी उपलब्ध होती है कि कितना कचरा लैंडफिल में जाने से बचाया गया, कितने पेड़ों की रक्षा हुई, कितना ईंधन बचा, कार्बन उत्सर्जन में कितनी कमी आई तथा पर्यावरण पर अन्य सकारात्मक प्रभाव क्या रहे। सहभागी परिवारों को इसके बदले कुछ आर्थिक प्रोत्साहन तथा प्रशंसा–पत्र भी प्राप्त होते हैं, जो प्रत्येक छोटे योगदान के महत्व को और अधिक मजबूत बनाते हैं।

इस पूरी यात्रा ने मुझे एक महत्वपूर्ण सीख दी है–पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी का अर्थ पूर्णता नहीं, बल्कि सहभागिता है। हममें से किसी को भी पर्यावरण विशेषज्ञ बनने की आवश्यकता नहीं है। केवल छोटी–छोटी अच्छी आदतें, यदि निरंतर अपनाई जाएँ, तो समय के साथ असाधारण परिणाम ला सकती हैं।



मैं अपनी यह कहानी अपनी उपलब्धियों का उल्लेख करने के लिए नहीं, बल्कि आपको यह विश्वास दिलाने के लिए साझा कर रही हूँ कि परिवर्तन की शुरुआत हममें से प्रत्येक के घर से हो सकती है। हम अक्सर सोचते हैं कि पर्यावरण संरक्षण के लिए बहुत अधिक समय, धन या विशेष ज्ञान की आवश्यकता होती है, जबकि वास्तविकता यह है कि निरंतर अपनाई गई छोटी–छोटी आदतें ही बड़े बदलाव की आधारशिला बनती हैं।

यदि आप अपने घर में कचरे का सही पृथक्करण करें, जैविक कचरे से कम्पोस्ट बनाने का प्रयास करें और यह सुनिश्चित करें कि रिसाइकल योग्य सामग्री वास्तव में रिसाइकल केंद्र तक पहुँचे, तो आपका यह छोटा–सा प्रयास भी पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान बन सकता है। अपने परिवार, पड़ोसियों और मित्रों को भी इस पहल से जोड़िए, क्योंकि जब एक–एक घर आगे बढ़ता है, तभी पूरा समाज सकारात्मक परिवर्तन का हिस्सा बनता है।

याद रखिए, पृथ्वी को कुछ ऐसे लोगों की आवश्यकता नहीं है जो पर्यावरण संरक्षण का कार्य पूरी तरह से करेंय उसे ऐसे करोड़ों लोगों की आवश्यकता है जो अपनी क्षमता के अनुसार, निरंतर और ईमानदारी से छोटे–छोटे प्रयास करते रहें। यही सामूहिक प्रयास स्वच्छ वातावरण, स्वस्थ समाज और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक हरित एवं टिकाऊ भविष्य का निर्माण करेंगे।

आइए, परिवर्तन की प्रतीक्षा न करें–बल्कि स्वयं वह परिवर्तन बनें जिसकी हमारे पर्यावरण को आवश्यकता है।

पूजा आनंद
कार्यपालक सचिव

मैं तो सिर्फ एक पेड़ ही तो हूँ



'मैं तो सिर्फ एक पेड़ ही तो हूँ' (एक पेड़ की व्यथा) के भावपूर्ण बोल और उसका सार नीचे दिया गया है, जो प्रकृति विनाश के खिलाफ एक मार्मिक प्रस्तुति है। यह कविता मनुष्य की स्वार्थी फितरत पर व्यंग्य करती है कि कैसे वे जीवन में ऑक्सीजन के लिए पेड़ काटते हैं और फिर अंतिम संस्कार के लिए लकड़ी का उपयोग करते हैं।

'मैं बस एक पेड़ ही तो हूँ...' इस एक पंक्ति में विकास और विनाश की पूरी कहानी छिपी है। जो पेड़ हमें सांस देते हैं, छांव देते हैं, फल देते हैं, वही विकास की दौड़ में सबसे पहले काटें जाते हैं।

आओ मेरी छावन में, फेफड़ो में ऑक्सीजन भर लो,
और हाँ मन भर जाये तो काट दो,
मैं बस एक पेड़ ही तो हूँ।
मुंबई से लेकर दिल्ली, दिल्ली से छतीसगढ़,
और छतीसगढ़ से लेकर अंडमान निकोबार तक,
मैं बस एक पेड़ ही तो हूँ।
साँसो के लिए जिस तरह ऑक्सीजन जरूरी है,
मरने के बाद चिता में जलने के लिए लकड़ी भी तो जरूरी है।
तो मोक्ष प्राप्ति के लिए बेजीझक काटो मुझे,
मैं बस एक पेड़ ही तो हूँ।
कुर्सी, मेज, सन्दूक, अलमारी तो सिर्फ फर्नीचर है,
मेरी छाल से बने पन्नों पर आपका लिटरेचर है।
पुलिस की लाठी, गांधी की काठी, जज का हथौड़ा भी मैं हूँ।
माथे का चंदन, फोटो का फ्रेम, दरवाजे की नेम प्लेट, मंदिर की चौखट भी मैं ही हूँ।
आईपीएल के हर डॉट बॉल पे मैं हूँ, हर सिक्सर लगाने वाला बैट भी मैं ही हूँ,
कहते हैं कि सब खेल लकड़ी की कुर्सी का ही है, जो कुर्सी पर बैठता है काटने का हक भी उसी का है।
आओ मेरी छावन में फेफड़ो में ऑक्सीजन भर लो, क्या पता कब कट जाऊँ,
मैं बस एक पेड़ ही तो हूँ, मैं बस एक पेड़ ही तो हूँ।।

प्रिंसी भाटिया
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (आर. एम.)

हर सिक्के की अपनी कहानी है



केवल धातु का टुकड़ा नहीं, राष्ट्र की पहचान का प्रतीक

जब भी हमारी हथेली पर कोई सिक्का आता है, तो अक्सर हम उसे केवल लेन–देन का एक माध्यम समझकर आगे बढ़ा देते हैं। शायद ही कभी हम यह सोचते हैं कि इस छोटे–से सिक्के के पीछे कितनी मेहनत, तकनीकी दक्षता, सटीकता और समर्पण की कहानी छिपी है। वास्तव में, हर सिक्के की अपनी एक कहानी होती है–एक ऐसी कहानी जो राष्ट्र की संस्कृति, इतिहास, विश्वास और प्रगति को अपने भीतर समेटे होती है।

सिक्का केवल धातु का एक टुकड़ा नहीं होता। यह देश की संप्रभुता, आर्थिक स्थिरता और राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक होता है। उस पर अंकित राष्ट्रीय चिह्न, महापुरुष, ऐतिहासिक धरोहरें या विशेष अवसरों की स्मृतियाँ आने वाली पीढ़ियों के लिए इतिहास का जीवंत दस्तावेज बन जाती हैं। समय बदलता है, पीढ़ियाँ बदलती हैं, लेकिन सिक्के अपने साथ उस युग की पहचान लेकर आगे बढ़ते रहते हैं।

एक सिक्के की यात्रा उसकी ढलाई से बहुत पहले शुरू हो जाती है। डिजाइन की अवधारणा, धातु का चयन, तकनीकी परीक्षण, गुणवत्ता नियंत्रण, सुरक्षा मानकों का पालन और सूक्ष्मतम स्तर पर निरीक्षण–इन सभी चरणों से गुजरकर वह आम नागरिक तक पहुँचता है। इस पूरी प्रक्रिया में असंख्य विशेषज्ञों, अभियंताओं, तकनीशियनों और कर्मचारियों का अथक परिश्रम शामिल होता है। उनके समर्पण का परिणाम ही वह सिक्का है जो करोड़ों लोगों के दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बनता है।

हमारे संगठन में कार्यरत प्रत्येक कर्मचारी इस कहानी का एक महत्वपूर्ण पात्र है। चाहे वह उत्पादन इकाई में कार्यरत हो, गुणवत्ता नियंत्रण में, अनुसंधान एवं विकास में, प्रशासन में या सहायक सेवाओं में–हर व्यक्ति का योगदान उस अंतिम उत्पाद की विश्वसनीयता और उत्कृष्टता सुनिश्चित करता है। जब हम अपने कार्य को केवल एक नौकरी नहीं, बल्कि राष्ट्र सेवा का माध्यम मानते हैं, तभी हमारे प्रयासों का वास्तविक अर्थ सामने आता है।

आज जब दुनिया तेजी से डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रही है, तब भी सिक्कों का महत्व कम नहीं हुआ है। वे केवल आर्थिक लेन–देन का साधन नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय पहचान के स्थायी प्रतीक हैं। स्मारक सिक्के हमारी ऐतिहासिक उपलब्धियों को अमर बनाते हैं, जबकि प्रचलन में रहने वाले सिक्के देश की आर्थिक गतिविधियों को सहज और सुचारु बनाए रखते हैं।

हर सिक्का हमें यह भी सिखाता है कि मूल्य केवल आकार या चमक से नहीं होता। उसका वास्तविक मूल्य उस विश्वास में निहित होता है जिसे समाज और राष्ट्र उसके साथ जोड़ते हैं। ठीक उसी प्रकार, किसी संगठन की सबसे बड़ी शक्ति उसकी मशीनें या भवन नहीं, बल्कि उसके कर्मचारी होते हैं। उनका ज्ञान, ईमानदारी, अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा ही संस्था की वास्तविक पूंजी है।

आइए, जब भी अगली बार कोई सिक्का हमारी हथेली में आए, तो हम उसे केवल मुद्रा के रूप में न देखें। उसे उन हजारों समर्पित हाथों की मेहनत, उत्कृष्ट तकनीक, अटूट विश्वास और राष्ट्र निर्माण की भावना के प्रतीक के रूप में देखें, जिन्होंने उसे आकार दिया है।

क्योंकि सच यही है–हर सिक्के की अपनी कहानी है। और उस कहानी का एक महत्वपूर्ण अध्याय हम सभी लिखते हैं।

संचित बत्रा
कनिष्ठ सचिव

एसपीएमसीआईएल निगम कार्यालय में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

एसपीएमसीआईएल निगम कार्यालय में कार्मिकों के समग्र स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए दिनांक 23.04.2026 को एक दिवसीय निःशुल्क 'स्वास्थ्य जांच शिविर' का सफल आयोजन किया गया।

स्वास्थ्य जांच शिविर के दौरान श'कैलाश दीपक हॉस्पिटल' द्वारा अपनी विशेषज्ञ सेवाएँ प्रदान की जिसमें नियमित और अनुबंधित कार्मिकों के लिए Blood Pressure (B.P.), Random Blood Sugar (R-B-S-), Weight, Height, ECG, Pulmonary Function Test (PFT), Bone Mineral Density (BMD), Physician Consultation, Orthopaedic Consultation, Diet Consultation, Physiotherapist Consultation], Cardiologist Consultation आदि शामिल थीं।

इसके अतिरिक्त एक सत्र का आयोजन किया गया जिसमें कैलाश दीपक हॉस्पिटल की ओर से डॉ. राहुल सिंह जी द्वारा कैंसर एवं उससे संबंधित रोगों से संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई।

इस जांच शिविर में कार्मिकों की भागीदारी उत्साहजनक रही तथा वरिष्ठ प्रबंधन सहित सभी स्तरों के कार्मिकों द्वारा सक्रिय रूप से भाग लिया गया।





एसपीएमसीआईएल निगम कार्यालय में हिंदी पखवाड़े 2025 का आयोजन

संघ की राजभाषा नीति के पूर्ण अनुपालन में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के प्रचार–प्रसार एवं सभी नियमित एवं अनुबंधित कार्मिकों को राजभाषा के प्रति प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से एसपीएमसीआईएल, निगम कार्यालय में हिंदी दिवस 2025 के उपलक्ष्य में दिनांक 14.09.2025 से 30.09.2025 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया।

पूर्व वर्षों की भांति भारत सरकार, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी दिवस तथा पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का उद्घाटन माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार के कर कमलों द्वारा सामूहिक रूप से दिनांक 14.09.2025 को गांधीनगर, गुजरात में किया गया। इस आयोजन में एसपीएमसीआईएल निगम कार्यालय सहित नियंत्रणाधीन सभी इकाइयों के प्रतिनिधियों द्वारा प्रतिभागिता सुनिश्चित की गई।

एसपीएमसीआईएल, निगम कार्यालय में वरिष्ठ प्रबंधन के निदेशानुसार इस अवसर पर कई नई एवं सृजनात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमें मुख्य रूप से निगम कार्यालय के आस–पास के प्रतिष्ठित विद्यालयों के छात्रों के लिए हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई।

सभी प्रतियोगिताओं में अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक, निदेशक (मानव संसाधन) की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिन्होंने

प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया तथा कार्यक्रम को अधिक प्रेरणादायक एवं उपयोगी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिंदी पखवाड़ा 2025 के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन दिनांक 13 अक्तूबर 2025 को अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर निगम की गृह राजभाषा पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के छठे अंक का विमोचन सभी वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा सामूहिक रूप से किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत ग्रीन फील्ड्स स्कूल, नई दिल्ली की छात्राओं द्वारा हिंदी साहित्य की कालजयी रचना "रश्मिरथी" पर प्रस्तुत एक सजीव एवं भावनात्मक नाट्य–प्रदर्शन से हुई, जिसने सभी उपस्थितों को भावविभोर कर दिया।

समारोह के दौरान एसपीएमसीआईएल निगम कार्यालय एवं सभी इकाइयों में आयोजित हिंदी पखवाड़ा 2025 की गतिविधियों की संक्षिप्त प्रस्तुति भी दी गई। प्रतियोगिताओं के सभी विजेता छात्राओं एवं नियमित एवं संविदा कार्मिकों को अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक, निदेशक (मानव संसाधन), निदेशक (वित्त) तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी की गरिमामयी उपस्थिति में प्रमाण–पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

मुख्य सतर्कता अधिकारी, निदेशक (वित) एवं निदेशक (मानव संसाधन) ने अपने संबोधन में सभी विजेताओं को बधाई दी तथा राजभाषा टीम द्वारा हिन्दी पखवाड़े के सफल आयोजन के लिए किए गए प्रयासों की सराहना की।

अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक ने विजेताओं को बधाई दी, "रश्मिरथी" की प्रभावशाली प्रस्तुति के लिए छात्रों का आभार व्यक्त किया और हिंदी को राष्ट्र की एकता, संस्कृति एवं प्रशासनिक सशक्तिकरण का प्रतीक बताया। साथ ही, उन्होंने राजभाषा अनुभाग द्वारा की गई व्यवस्था की प्रशंसा करते हुए आयोजन को सफल और प्रेरणादायक बताया। कार्यक्रम का समापन सभी उपस्थित अधिकारियों, प्रतिभागियों एवं सहयोगी कर्मियों के प्रति आभार व्यक्त करने के साथ किया गया।









करेंसी नोट प्रेस, नासिक में दिनांक 27.02.2026 व 28.02.2026 को आयोजित राजभाषा सम्मेलन की रिपोर्ट

वित्त मंत्रालय के आर्थिक कार्य विभाग के त्तवावधान में एसपीएमसीआईएल के निगम कार्यालय तथा इसके नियंत्रणाधीन 09 इकाइयों के राजभाषा अधिकारियों एवं अनुवादकों के लिए दिनांक 27.02.2026 एवं 28.02.2026 को करेंसी नोट प्रेस, नासिक में दो दिवसीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री एस. के. सिन्हा, निदेशक (मानव संसाधन), एसपीएमसीआईएल द्वारा की गई। वित्त मंत्रालय से श्री एस. सामन्ता, उप सचिव, आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ने विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मेलन में सहभागिता की। श्री डी. के. रथ, मुख्य महाप्रबंधक, करेंसी नोट प्रेस, नासिक (आयोजक इकाई) द्वारा कार्यक्रम के आयोजन से संबंधित सभी व्यवस्थाओं की व्यक्तिगत रूप से देखरेख की गई तथा सम्मेलन को सफल बनाने हेतु अल्प समय में उपस्थित प्रतिभागियों के लिए आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए विशेष प्रयास किए गए।

वित्त मंत्रालय से प्रशासनिक कार्यों से संबंधित 32 अधिकारियों के प्रतिनिधिमंडल ने भी इस सम्मेलन में भाग लिया। एसपीएमसीआईएल के निगमीकरण के उपरांत मंत्रालय एवं एसपीएमसीआईएल के मध्य आयोजित यह प्रथम संयुक्त राजभाषा सम्मेलन राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन, प्रचार–प्रसार तथा इस संबंध में जारी सरकारी निर्देशों के अनुपालन के उद्देश्य की पूर्ति की दिशा में अत्यंत उपयोगी एवं सफल रहा। आयोजक इकाई के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण भी कार्यक्रम के प्रमुख सत्रों में उपस्थित रहे।





एसपीएमसीआईएल इकाइयों में माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा संपन्न राजभाषा निरीक्षण



बैंक नोट मुद्रणालय, देवास (15.10.2025)



भारत सरकार टकसाल, मुंबई (17.11.2025)



भारत सरकार टकसाल, कोलकाता (24.12.2025)

सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(एसपीएमसीआईएल)



सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एसपीएमसीआईएल)
तृतीय मंजिल, टॉवर - जी, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, नौरोजी नगर, नई दिल्ली, 110029